

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

11-जून-2014 13:24 IST

राज्यसभा में माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर 'धन्यवाद प्रस्ताव' के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गये वक्तव्य का मूल पाठ

आदरणीय सभापति जी, और सभी आदरणीय वरिष्ठ सदस्यों, सदन में मुझे पहली बार बोलने का अवसर मिला है। यहां सारे अनुभवी, वरिष्ठ महानुभाव हैं। आगे मुझे उन सबसे बहुत कुछ सीखना भी है, लेकिन आज प्रारंभ में मेरे अनुभव की कमी के कारण कोई अगर चूक रह जाए, आप सब मुझे क्षमा करेंगे। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर सदन में करीब 42 आदरणीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं। अकेले गुलाम नबी आजाद जी, फिर सतीश जी, देरेक ओब्रायन जी, श्रीमान डी पी त्रिपाठी जी, प्रो. रामगोपाल यादव जी, श्री सीताराम येचुरी जी, सभी वरिष्ठ महानुभावों ने अपने-अपने विचार रखे हैं। सभी दलों के नेताओं ने अपने-अपने विचार रखे हैं और बहुतायत इसका समर्थन हुआ है। कहीं पर कुछ रचनात्मक सुझाव भी आए हैं। कुछ एक में अपेक्षाएं भी व्यक्त की गई हैं, लेकिन ये चर्चा बहुत सार्थक रही है। किसी भी बेंच पर क्यों न बैठे हों, लेकिन स्वीकार करने योग्य भी सुझाव आए हैं, उन सुझावों का आने वाले दिनों में रचनात्मक तरीके से सही उपयोग करने का प्रयास हम करेंगे और इसके लिए मैं रचनात्मक सुझाव देने वाले सभी आदरणीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूं।

कुछ आदरणीय सदस्यों ने चिंता व्यक्त की है और आकांक्षा भी व्यक्त की है कि यह कैसे संभव होगा, कब करोगे, कैसे करोगे? ये बात सही है कि पिछले कई वर्षों से एक ऐसा निराशा का माहौल छाया हुआ है और हर किसी का मन ऐसा बन गया है कि अब कुछ नहीं हो सकता, अब सब बेकार हो गया है उसकी छाया अभी भी है और उसके कारण कैसे होगा, कब होगा, कौन करेगा यह सवाल उठना बहुत स्वाभाविक है, लेकिन कुछ ही दिनों में विश्वास हो जाएगा, ऐसे मित्रों को भी कि अब निराशा का माहौल छंट चुका है और एक नये आशा और विश्वास के साथ देश आगे बढ़ने का संकल्प कर चुका है।

कई वर्षों के बाद देश ने एक ऐसा जनादेश दिया है जिसमें देश ने स्थिरता को प्राथमिकता दी है और एक स्टेबल गवर्मेंट के लिए वोट दिया है। भारत के मतदाताओं का ये निर्णय सामान्य निर्णय नहीं है। हम देशवासियों के आभारी हैं। उन्होंने भारत की संसदीय प्रणाली को इतनी उमंग और उत्साह के साथ देश ने अनुमोदन किया है। इसके साथ-साथ समय की मांग है कि हम सब हमारे अपने महान लोकतंत्र के प्रति गौरान्वित हो कर के, विश्व के सामने जरा सिर ऊंचा करके, हाथ मिलाकर बोलने की आदत बनाएं। हमारे मतदाताओं की संख्या अमेरिका और यूरोप, उनकी कुल जनसंख्या से भी ज्यादा हैं, यानी हमारा इतना विशाल देश है, इतना बड़ा लोकतंत्र है। पर चाहे, हमारे यहां अनपढ़ हो, गरीब हो, गांव में रहता हो, और उसके पास पहनने को कपड़े भी न हो, लेकिन उसकी रंगों में जिस प्रकार से लोकतंत्र ने जगह बनाई, ये हमारे देश के लिए बड़े गौरव की बात है, लेकिन हम इसको उस रूप में अभी तक विश्व के सामने ला नहीं पाए हैं। ये हम सबका सामूहिक कर्तव्य है कि हम भारत की इस लोकतांत्रिक ताकत को विश्व के सामने उजागर करें और एक नये आत्मविश्वास का संचार करें, इस दिशा में हम आगे बढ़ें।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में अनेक बिन्दुओं को स्पर्श किया है और सभी माननीय सदस्यों ने अपने-अपने तरीके से उनको व्यक्त करने का प्रयास किया है। लेकिन एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि विजय और पराजय दोनों में सीख देने की ताकत होती है और सीख पाने की आवश्यकता भी होती है, जो विजय से सीख नहीं लेता है, वो पराजय के बीज बोता है और जो पराजय से सीख नहीं लेता वो विनाश के बीज बोता है, 'जय और पराजय' के तराजू से ऊपर उठ करके, हमने कुछ सीखा है।

मैं एक बार आचार्य विनोबा जी के चिंतन को पढ़ रहा था और उसमें उन्होंने युवा की व्याख्या की है और बड़ी सरल और अच्छी व्याख्या की। उन्होंने कहा युवा वो होता है, जो आने वाले कल की सोचता है, आने वाली कल की बोलता है, लेकिन जो बीती हुई बातों को गाता रहता है, वो युवा नहीं हो सकता। उसकी सोच युवा नहीं हो सकती। उसके लिए बीती हुई बातों को ही गुनगुनाते रहना, लोग चाहे स्वीकार करें, या न करे लोग अस्वीकार करें तो भी उसी अपने लहजे में रहना, ये हमने भी देखा है। कभी रेलवे में बस में कोई ऐसे बड़े सज्जन मिल जाते थे, तो उनको देर तक सुनना पड़ता है उनका भूत काल क्या था उनको वो सारी कथाएँ सुनानी होती हैं। ये विनोबा जी की युवा की बड़ी बढिया डेफिनेशन है और मैं मानता हूं उसे अपने आने वाले दिनों की ओर सोचने के लिए प्रेरित करेगी।

भारत की एक ताकत उसका संघीय ढांचा है। बाबा साहेब अंबेडकर और उस समय के हमारे विद्वत् पुरुषों ने हमें जो संविधान दिया है उसकी सबसे बड़ी एक ताकत है ये संघीय ढांचा है। हमें आत्म-चिंतन करने की आवश्यकता है कि क्या हमने दिल्ली में बैठ करके संघीय ढांचे को ताकत दी है या नहीं दी है, इसको और अधिक सामर्थ्यवान बनाया है या नहीं बनाया है और अगर भारत को आगे बढ़ाना है तो राज्यों को आगे बढ़ना पड़ेगा। अगर राष्ट्र को समृद्ध होना है, तो राज्यों को समृद्ध होना पड़ेगा और अगर राष्ट्र को सशक्त होना है तो राज्यों को सशक्त होना होगा और इसलिए जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में काम करता था, हम एक मंत्र हमेशा बोलते थे 'भारत के विकास के लिए गुजरात का विकास'। हम हमेशा ये शब्द प्रयोग करते थे। क्या राज्यों के अंदर ये माहौल हम पनपा पाए हैं?

मेरा ये सद्भाग्य रहा है कि एक राज्य के मुखिया के रूप में पीड़ा क्या होती है, उसे बहुत मैंने झेला है, अनुभव किया है। मेरा ये भी सौभाग्य रहा है कि यदि दिल्ली में अनुकूल सरकार हो, तब राज्य का क्या हाल होता है और प्रतिकूल सरकार दिल्ली में हो तब राज्यों का क्या हाल होता है और इसीलिए मैं एक भुक्तभोगी व्यक्ति हूँ। मैंने इन कठिनाईयों को झेला है कि राज्यों को कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं मैंने, इसको भली-भांति समझा है। राज्य कितनी ठोकरें खाता है, राज्यों की बात को किस प्रकार से नकारा जाता है, सिर्फ निजी स्वार्थ के खातिर राज्यों की विकास की योजनाओं को किस प्रकार से रोका जाता है। पर्यावरण के नाम पर राज्यों की विकास यात्रा को दबोचने के लिए किस प्रकार के षडयंत्र होते हैं, इन सारी बातों का मैं भुक्तभोगी हूँ।

अब इसीलिए एक ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिला है, एक ऐसे व्यक्ति को देश की सेवा करने का सौभाग्य मिला है, जो राज्यों की पीड़ा को भली-भांति समझता है। आज मैं इस पीड़ी को जानते हुए इस सदन को विश्वास दिलाता हूँ कि हम कार्य करेंगे। आदरणीय सभापति जी, राष्ट्रपति जी के भाषण में हमने इस बात को बल दिया है और हमने को-ऑपरेटिव फेडरलिज्म की बात की है कि बड़े भाई, छोटे भाई वाला कारोबार नहीं चलेगा। हमें राज्यों के साथ समानता का व्यवहार करना होगा, हमें उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने का दिशा बना लेनी है। हमें एक ऐसी कार्य संस्कृति विकसित करनी होगी, जिसमें राज्य को भी अनुभूति हो कि मैं भारत की भलाई के लिए काम कर रहा हूँ और भारत की सरकार चलाने वाले लोगों के मन में भी यह रहना चाहिए कि हिन्दुस्तान का छोटा से छोटा राज्य भी क्यों न हो, उसके विकास के बिना हिन्दुस्तान का विकास होने वाला नहीं है। हमें इस मन की रचना के साथ देश को आगे चलाना है। आदरणीय सभापति जी, यह मैं बड़े विश्वास से कहता हूँ कि बहुत सी बातें ऐसी हैं अगर हम राज्यों को विश्वास में लें तो हमारे कार्य की गति बहुत बढ़ सकती है। हमने 'टीम इंडिया कांसेप्ट' की बात आदरणीय राष्ट्रपति जी के भाषण में कही। भारत जैसे संघीय राज्य व्यवस्था वाले देश को चलाना है तो प्रधानमंत्री और सभी मुख्यमंत्री इनको टीम इंडिया के रूप में काम करना चाहिए। प्रधानमंत्री और उनके कैबिनेट के मंत्री, ये टीम सफिशियंट नहीं हैं। प्रधानमंत्री और राज्यों के मुख्यमंत्री, यह टीम का एक स्वरूप हमें उभारना होगा और उस पर अगर हम बल देंगे, तो हम राज्यों की ताकत, राष्ट्र के विकास पर मैं जोड़ पाएंगे।

मैंने सुना, मैत्रीयन जी का भाषण हुआ। उन्होंने कहा कि उनके मुख्यमंत्री ने चालीस चिट्ठियां लिखी थी लेकिन एक का जवाब नहीं आया था। ये स्थिति हमें बदलनी होगी। इसलिए इस अवस्था को लाने के लिए कोई मैकेनिज्म विकसित हो, उस पर हम प्रयास करने के पक्ष में हैं। हम आगे बढ़ना चाहते हैं। हमारे देश में कुछ लोगों को 'गुजरात मॉडल' की बड़ी चिंता हो रही है। कुछ लोगों के मन में ये भी सवाल है कि 'गुजरात मॉडल' आखिर है क्या? तो उनकी इस मुसीबत का तो मैं अंदाज लगा सकता हूँ। 'गुजरात मॉडल' को अगर सरल भाषा में समझना है तो वो ये है कि अगर उत्तर प्रदेश में मायावती जी की सरकार ने कोई अच्छा काम किया, उसको समझना, स्वीकार करना और हमारे यहां लागू करना, यह 'गुजरात मॉडल' है। केरल में लेफ्ट की सरकार थी लेकिन उनका एक कुटुम्बश्री प्रोग्राम था, हमने उससे सीखा। हमारे यहां अनुकूलता के अनुसार उसे लागू किया। सबसे बड़ी बात है कि आज एक राज्य दूसरे राज्य की जो चर्चा हो रही है, वो मॉडल की चर्चा है और मॉडल की चर्चा विकास के संदर्भ में हो रही है। ये हमारे लिए एक अच्छा माहौल तैयार कर रही है कि एक राज्य दूसरे राज्य के साथ विकास की स्पर्धा के साथ चर्चा कर रहा है मेरे कान ये सुनने के लिए हमेशा लालायित रहते हैं कि कभी बंगाल ये कहे कि हम गुजरात से आगे निकल गए। कभी तमिलनाडु कहे कि गुजरात और बंगाल दोनों से हम आगे निकल गए। कभी आंध्र कहे कि हम तेलंगाना से आगे निकल गए, तो तेलंगाना कहे कि हम आंध्र प्रदेश से आगे निकल गए। कभी बिहार कहे कि हमने गुजरात को पीछे छोड़ दिया, ये स्पर्धा का माहौल, विकास की स्पर्धा का माहौल, हमें देश में देखना है, बनाना है। उस दिशा में हम इस बात को लेकर के आए हैं कि हम हमें को-ऑपरेटिव फेडरलिज्म को लेकर देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं।

हमारे देश में हर राज्य की अपनी शक्ति भी है हर राज्य की अपनी विशेषता भी। हमें उसे समझना होगा। गुजरात जैसा छोटा सा राज्य, लेकिन हर जिले में हमारा एक मॉडल काम नहीं करता है। एक ही प्रकार के कुर्ते सारी दुनिया को पहनाए नहीं जा सकते। वहां की विशेषता ये है कि रेगिस्तान वाला कच्छ का मॉडल हरे-भरे वलसाड में नहीं चल सकता है। उसी

प्रकार से एक राज्य का मॉडल दूसरे राज्य पर थोपा नहीं जा सकता। उसी प्रकार से दिल्ली के विचार राज्यों पर नहीं थोपे जा सकते। उसकी Priority क्या है, उसकी कठिनाईयां क्या हैं। उसके अनुरूप संसाधनों का उपयोग करके, उन शक्तियों को बल देने से वो तेज़ गति से आगे बढ़ेगी। इसलिए विकास में राज्यों और राष्ट्र की दोनों की सामूहिक जिम्मेदारी है। एक नए राजनीतिक चरित्र की दिशा में हम बढ़ना चाहते हैं। हम भारत माता के चित्र को देखेंगे हमें ध्यान में आता है कि भारत माता का पश्चिमी किनारा वहां तो कोई गतिविधि नज़र आती है, केरल हो, कर्नाटक हो, गोवा हो, महाराष्ट्र हो, गुजरात हो, राजस्थान हो, हरियाणा हो, दिल्ली हो, पंजाब हो, लेकिन हमारे देश का पूर्वी इलाका ओडिशा हो, बिहार हो, पश्चिम बंगाल हो, उत्तर प्रदेश का पूर्वोत्तर हो, क्या हमारी भारत माता ऐसी हो कि जिसका एक हाथ तो मजबूत हो और दूसरा हाथ दुर्बल हो। ये भारत मां कैसे मजबूत बनेगी। इसलिए हमारे लिए ये प्राथमिकता है कि भारत का पूर्वी छोर जो विकास में पीछे रह गए, उसको कम से कम पश्चिम की बराबरी में लाने के लिए हमें अथाह प्रयास करना है।

विकास, जब हम कहते हैं 'सबका साथ, सबका विकास'। विकास सर्व-समावेशी होना चाहिए, विकास सर्व-स्पर्शी होना चाहिए, विकास सर्व-देशिक होना चाहिए, विकास सर्वप्रिय होना चाहिए, विकास सर्वहितकारी होना चाहिए और इसलिए विकास को किसी एक कोने में देखने की आवश्यकता नहीं। जब हम उसको परिभाषित करें तब, एक समग्र कल्याण की परिभाषा को लेकर, आगे बढ़ने की कल्पना लेकर के हम चलने वाले हैं। इसलिए भारत का जो पूर्वी इलाका है उसकी हम चिंता करें। नार्थ-ईस्ट, हम आर्थिक मदद करें। नार्थ-ईस्ट को उसके नसीब पर छोड़ दें, कब तक चलेगा। क्या हम एक नए सिरे से नहीं सोच सकते।

आज हमारे देश में 20 हजार से ज्यादा कॉलेज हैं। हर कॉलेज के स्टूडेंट्स दस दिन के लिए टूर पर जाते हैं। यह उनका एक रेगुलर कार्यक्रम रहता है। क्या कभी हमने हमारे कॉलेजों को गाड़ किया कि कम से कम हर कॉलेज साल में एक बार दस दिन के लिए नार्थ-ईस्ट का एक टूर जरूर करें। आप विचार कीजिए अगर देश के 30 हजार कॉलेज के 100 विद्यार्थी नार्थ-ईस्ट में एक हफ्ते रहने के लिए जाते हैं, उससे नार्थ-ईस्ट का टूरिज्म कितना बढ़ सकता है, इको टूरिज्म कितना बढ़ सकता है। इससे नार्थ-ईस्ट के लोगों के सुख-दुख को हिन्दुस्तान के कोने-कोने का व्यक्ति जानेगा। नार्थ-ईस्ट के साथ का अपनापन कितना हो जाएगा। उसे भी लगेगा कि हिन्दुस्तान हर कोने को की भारत मां की जय बोलने वाले लोग हैं। उनको गले लगाने का एक रास्ता नहीं हो सकता। तरीके ढूँढ़ने होते हैं किस प्रकार के नए तरीकों से हम देश को चला सकते हैं उसकी योजना बनानी हो तो हो। एक बार मुख्यमंत्री के कार्यकाल के दरम्यान, नार्थ-ईस्ट के सभी मुख्यमंत्रियों को मैंने इस संबंध में चिट्ठी लिखी थी।

जब प्रधानमंत्री जी मनमोहन सिंह जी थे तब एक बार उन्होंने एनडीसी बुलाई थी उस समय भी मैंने उनसे पब्लिकली यह कहा और आग्रह किया था कि नार्थ-ईस्ट के सभी स्टेट्स से 200 वुमेन पुलिस आप गुजरात भेजिए 2 साल के लिए और हर 2 साल के बाद चेंज करते रहिए। इससे 15 सौ 2 हजार लोगों को वहां काम मिलेगा और जब वे वापिस जाएंगे तो यहां कई परिवारों से उनका नाता जुड़ जाएगा। इस प्रकार से इंटीग्रेशन का कितना बढ़िया काम संभव हो सकेगा। 'एक भारत' जो हम कहते हैं न, यह 'दो' या 'तीन' भारत के संदर्भ में एक नहीं है।

भारत की एकता की बात है। आज जातिवाद के ज़हर ने देश को डूबो दिया है प्रांतवाद की भाषा ने देश को तबाह करके रखा है। समय की मांग है कि यह तोड़ने वाली भाषा को छोड़कर के एकता की भाषा को एकस्वर से बोलना चाहिए और इस लिए एक भारत श्रेष्ठ भारत का सपना लाए हैं। अगर किसी को एक भारत में से 'दो' दिखता है, तो यह उनकी मानसिक बीमारी का परिणाम है। हम तो एकता का मंत्र लेकर आए हैं।

हम भाषा से परे हो कर के जाति से परे हो करके, सम्प्रदाय से परे हो करके, एक राष्ट्र का सपना ले करके हम चलें। यह देश विविधता में एकता वाला देश है। हमारा देश एकरूपता वाला देश नहीं है और देश एकरूपता वाला बनना भी नहीं चाहिए। हम वो लोग नहीं हैं कि हर 20 किलो मीटर पर एक ही प्रकार का पीजा खाएं, हम वे लोग हैं नीचे से निकले तो इडली खाते निकले और ऊपर जाते-जाते परौठा हो जाता है। यह विविधता से भरा हुआ देश है। उसे एकरूपता से उसे नहीं देखा जा सकता है और इसलिए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का सपना लेकर के हम देशों की कल्याण की बात कर रहे हैं।

हमारे देश में संसाधनों के संबंध में हम नए तरीके से प्रेरित कैसे कर सकते हैं। राज्यों के अपने स्वभाव है अपनी विशेषताएं तकनीकी में। उन समस्याओं को सम्मिलित रूप से समस्याओं को समाधान करने का सामूहिक प्रयास करते हैं। जैसे हिमालय स्टेट्स हैं, हिमालय स्टेट को हम तराई के इलाको से प्रगति के मॉडल से फिट नहीं कर सकते हैं। हमारा अफसर जाएगा वह कहेगा कि 60 किमी की स्पीड से गाड़ी चलनी चाहिए, अब हिमालय में 60 किमी की स्पीड से कैसे चलेगी। वो कहेगा कि एक गाड़ी इतना किमी चलेगी तो इतना डीज़ल मिलेगा, वहां इतना डीज़ल से कहां चलने वाला। केवल इसलिए हमें एक ही प्रकार के सोल्यूशन से बाहर आना पड़ेगा, इसलिए राष्ट्रपति जी के भाषण में इस बात को हमने उजागर भी किया है कि हिमालय रेंज के जितने भी स्टेट्स हैं, उनको एक साथ बैठकर करके उनकी समस्याओं को समझा जाए। उनके

लिए एक न्यूनतम कॉमन व्यवस्था को विकसित कर सकते हैं, क्या इस दिशा में कुछ कर सकते हैं, क्या?

कोस्टों से समुद्री तटीय पर विकास आज विश्व व्यापार का युग है। कितनी तेजी से आज समुद्रीय तटों का विकास हुआ है। हमारा भारत का समुद्रीय तट भारत समृद्धि का प्रवेश द्वार बन सकता है। हमारा कोस्टल एरिया भारत के प्रोपर्टी का साधन बन सकता है। लेकिन आज सबसे ज्यादा उपेक्षित है। हमने ज्यादा से ज्यादा छोटे से मछुआरों का सोचा, हमारे पूरे कोस्टल गेट के development के लिए भी और इसीलिए राष्ट्रपति जी के भाषण में कोस्टल development के लिए एक अलग से विचार करने की व्यवस्था सोची गई है। हम चाहते हैं, कोस्टल राज्य एक साथ बैठे। कोस्टल development में क्या कॉमन विचार हो, उनकी क्या कठिनाईयां हैं एक दूसरे को co-ordinate कैसे करें। एक दूसरे की ताकत कैसे बनें और विकास की स्पर्धा में अपने अनुभव को कैसे share करें। भारत का समुद्री तट बहुत बड़ा है। हम एक ऐसे भौगोलिक location में हैं कि हम east और west को जोड़ने के लिए, एक बहुत बड़ी समुद्री ताकत बन सकते हैं लेकिन हमें उसमें जितना आगे बढ़ना चाहिए था, नहीं बढ़े। श्रीलंका का कोलंबो छोटा सा है लेकिन आज वह विश्व व्यापार में सामुद्रिक व्यापार का जिस प्रकार का क्षेत्र बना हुआ है। एक तरफ सिंगापुर बना हुआ है। एक तरफ पाकिस्तान के अंदर चीन अपने ports डाल रहा है, तब जा कर के भारत के समुद्र की ओर एक विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। क्या उसके लिए भारत के समुद्री विकास का मॉडल उनके साथ बैठकर नहीं बनाया जा सकता।

हमारे यहां landlocked स्टेट्स हैं। उनमें भी विविधताएं भरी पड़ी हैं। उनकी विविधताओं को समझना होगा। हमारे यहां माओवाद से इफेक्टेड एरियाज़ हैं। कुछ माओवाद prone जोन भी हैं। कुछ माओवाद प्रोन जोन भी हैं। क्या उन्हीं को identify करके उनके साथ बैठकर उसी स्पेसिफिक समस्या के समाधान के लिए केन्द्र और राज्य मिलकर काम नहीं कर सकते? इसलिए हम आगे आने वाले दिनों में इन चीजों को आगे कैसे ले जाएं, उस आगे ले जाने का हमारा रास्ता भी यही लेकर हम चलना चाहते हैं, ताकि हिन्दुस्तान का हर एक राज्य अपनी शक्ति और सामर्थ्य के आधार पर विकास की यात्रा में आगे आए।

आजकल क्या हुआ है? हम दिल्ली में राजनीतिक माइलेज प्राप्त करने में कोई भी निर्णय कर लेते हैं, कोई भी कानून बना देते हैं, लेकिन उसको इम्प्लीमेंट करने की जिम्मेदारी स्टेट्स की होती है। उनके पास रिसोर्सेज नहीं होते और इसलिए वह योजना धरी की धरी रह जाती है। अखबार में चार-छह दिन आ जाता है और फिर गाली पड़ती है कि आपने दिल्ली में यह किया लेकिन उसे आपने लागू नहीं किया। ये तनावपूर्ण वातावरण हम क्यों पैदा करते हैं? मैं राज्य में रहा हूं, इसलिए मुझे मालूम है कि यह तनाव हमें विपरीत दिशा में ले जाता है और इसलिए हमें इन स्थितियों पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है और उसमें बदलाव करने की आवश्यकता है।

हमारे एग्रीकल्चर के भी Agro-climate zones हैं। हर राज्य में एक फसल का एक निश्चित एरिया हैं। उसकी mapping तो है, लेकिन गेंहू पकाने वाले राज्यों की अलग समस्या है, उनको अलग से बिठाकर बात करेंगे, चावल पकाने वाले राज्यों की अलग समस्या है, उनसे हम अलग से बात करेंगे और गन्ना पकाने वाले राज्यों की अलग समस्या है, उनसे अलग से बात करेंगे। जब तक हम Issue-centric, focused activity नहीं करते, हम इतने बड़े विशाल देश को सिर्फ दिल्ली से चलाने की कोशिश करते रहेंगे और नीतियां बनाने के मामले में हम दुनिया को कहेंगे कि इतने एक्ट बनाये, इतने किए, लेकिन इससे स्थितियां नहीं बदलेंगी।

आज आवश्यकता है कि अपने विचारों को, अपनी बातों को आखिरी व्यक्ति तक कैसे पहुंचाएँ। Last man delivery ये सबसे बड़ी समस्या है और इसके लिए मूल कारण Governance.

स्वराज मिला, हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि हम सुराज नहीं दे पाये। मैं नेता चुना गया, जिन्होंने उस दिन का भाषण सुना होगा, मैंने साफ कहा है कि मैं इस विचार का नहीं हूँ कि पहले की सरकारों ने कुछ नहीं किया है और कोई सरकार कुछ न कुछ करने के लिए तो आती नहीं है। हर सरकार कुछ करने के लिए आती है। अपने-अपने समय में हर सरकार ने कुछ न कुछ किया है। उन सबका cumulative परिणाम है कि आज हम यहां आये हैं, लेकिन जितना होना चाहिए था नहीं हुआ है, जिस दिशा में होना चाहिए था उस दिशा में नहीं हुआ है और जिस प्रकार से देश के अंदर उस प्रकार से ऊर्जा नहीं भरी, इन कमियों को हमें पूर्ण करना होगा।

महोदय, यही देश नेता बाहर जाकर आज भी कहते हैं कि हमारा देश तो गरीब है और वही हमें मिसाइल दिखा रहे हैं। यह देश कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था। यह देश विश्व के समृद्ध देशों में सबसे आगे माना जाता था। यह देश ज्ञान-विज्ञान की दुनिया में प्रगति पर माना जाता था। गुलामी के कालखंडमें सब ध्वस्त हो चुका, उसमें से हम बाहर आ सकते हैं। हम स्वराज्य की ओर हम कैसे बल दें? हमारे लोकतंत्र के ढांचे से हम इस रूप से दब गये, अपने आप पता नहीं क्या कठिनाईयां महसूस कि हमने Good Governance पर बल नहीं दिया। Good Governance सामान्य नागरिक के प्रति

जवाबदेह होता है। क्या आज हम यह कह सकते हैं कि हमारा पूरा प्रशासन तंत्र सामान्य नागरिक के प्रति जवाब देह है? लोकतंत्र कि पहली शर्त होती है कि वह नागरिकों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए, लेकिन यह स्थिति नहीं है। क्या हम यह कह सकते हैं कि व्यवस्था तंत्र में गरीब से गरीब व्यक्ति कि सुनवाई हो रही है? तो लोकतंत्र की वह कौन सी असलीयत है जो इस प्रकार की कमियां पैदा कर रही है? इसलिए समय की मांग है कि देश के अंदर सुराज पर हमें बल देना पड़ेगा, इसलिए हमें सुराज पर बल देना है।

महोदय, व्यक्ति कितना ही स्वस्थ क्यों न दिखता हो, ऊंचाई हो, वजन ठीक हो, सब हो, कोई बीमारी न हो, लेकिन अगर एक डायबिटिज उसके शरीर में प्रवेश कर जाए, तो उसका सारा शरीर बीमारियों का घर बन जाता है। जिस प्रकार से शरीर में डायबिटिज का प्रवेश पूरे शरीर को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार से शासन व्यवस्था में bad governance की एंट्री पूरे शासन तंत्र को, पूरे देश को तबाह कर देती है। Bad Governance डायबिटिज से भी भयंकर होता है। हमारा आग्रह है, हमारा प्रयास है कि हम Good Governance से चले।

महोदय, देश में करप्शन की चिंता है और मैं मानता हूं पूरे विश्व में हमारी एक पहचान बनी है, अच्छी है, बुरी है, सही है, गलत है, हरेक के अपने-अपने विचार होंगे, लेकिन दुनिया के सामने हिंदुस्तान एवं 'Scam India' यह पहचान बन गई है, और उसी ने भारत की विकास की यात्रा को बहुत बड़ा सदमा पहुंचा है। हमारे टूरिज्म पर बहुत बड़ी ब्रेक लगी, यह क्यों लगी? बलात्कार की घटनाओं ने टूरिस्टों के आने में रोक पैदा कर दी है। पूरे देश की विकास यात्रा में भारत की छोटी-छोटी घटनाएं भी बहुत बड़ी चिंता बनी हुई है और इस पर राजनीति नहीं हो सकती हैं। क्या हम terrorism पर भी राजनीति करेंगे? क्या माओवाद के हमलों पर भी राजनीति करेंगे? क्या मां-बहनों पर बलात्कार पर भी राजनीति करेंगे? निर्दोषों की हत्या पर भी राजनीति करेंगे? समय की मांग है कि हम इससे ऊपर उठकर के एक के सामूहिक दायित्व के साथ इन समस्याओं के संबंध में कोई Compromise नहीं करेंगे, मिल बैठकर कोई रास्ता निकालेंगे और देश की छवि जो बर्बाद हो रही है, उससे बाहर निकलने का प्रयास करेंगे।

महोदय, विश्व का भारत के प्रति आकर्षण बन रहा था। टूरिज्म के लिए लोग भारत की तरफ मुड़े थे, लेकिन अचानक पिछले कुछ समय में इसमें गिरावट आई है। यह गिरावट इन्हीं घटनाओं के कारण आई है। क्या हमारी सामूहिक जिम्मेवारी नहीं है? क्या राजनीति से ऊपर उठ करके इन समस्याओं के समाधान के लिए रास्ता नहीं निकाले जा सकते हैं?

महोदय, यह ऐसा सदन है, जहां देश का talent बैठता है, यह देश की विधिवत सभा है। इन्हें मार्गदर्शन करना पड़ेगा। इसी गृह में मार्गदर्शन करना पड़ेगा। हमें मिल करके रास्ते खोजने पड़ेंगे और हमारी कोशिश है कि हम मिल बैठ कर रास्ता खोजें और देश को आगे ले जाएं।

हमारे देश में corruption के खिलाफ आम आदमी का रोष है। हमारी कानूनी व्यवस्था में कौन करप्ट आदमी कब जेल जाएगा, इसके लिए देश इंतजार करने को तैयार नहीं है। उसके हाथ में जो शस्त्र है, उससे राजनेताओं को सजा देने के लिए आज वह काबिल हुआ है। लेकिन, उससे बात बननी है। जितनी चिंता करप्शन के बाद की होती है, उससे ज्यादा चिंता करप्शन न हो, इसके लिए चिंता करने की आवश्यकता है। इसलिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में इस बात पर भी बल दिया है कि करप्शन के बाद के लिए किए जाने वाले Measures पर ज्यादा चर्चा हो चुकी है, उसके कई मुद्दे हैं, लेकिन करप्शन न हो इसके लिए भी तो कुछ-कुछ चीजें की जा सकती है और उसमें एक है The State must be policy driven, अगर The State must be policy driven है तो करप्शन की संभावनाएं बहुत ही कम रहती है, ग्रे एरिया बहुत ही कम रहता है। दूसरा है टेक्नोलॉजी। आज टेक्नोलॉजी करप्शन को रोकने में बहुत बड़ा रोल प्ले कर सकती है। अगर Environment Ministry की फाइलें ऐसे ही जमा रहती हैं और भ्रांति-भ्रांति के आरोप लगते हैं, लेकिन वही ऑनलाइन हो, कोई भी एप्लिकेंट फॉर्म अपने पासवर्ड से ऑनलाइन देख सकता है। कि आज मेरी फाइल की क्या पोजिशन है? टेक्नोलॉजी के द्वारा इतनी transparency आ सकती है कि हमारे यहाँ एक सामान्य मानव भी करप्शन करने से पहले 50 बार सोचेगा। सीसीटीवी कैमरा जैसी चीजें भी आज आदमी को डरा रही हैं, खुंखार-खुंखार व्यक्तियों को भी डरा रही है, तो हम टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग कर सकते हैं। करप्शन को कर्ब करने के लिए अभी ई-टेंडरिंग वगैरह छोटी-मोटी चीजें प्रारम्भ हुई हैं, लेकिन उसको और व्यापक रूप से आगे लाया जाए। इतना ही नहीं, अगर हम स्कूलों में बच्चों के प्रेजेन्स को बायोमेट्रिक सिस्टम से जोड़ दें, तो फिर अगर कहीं 40 बच्चें हैं और कोई 80 लिखवाकर सारी सहायता ले रहा है, तो वह करप्शन अपने आप चला जाएगा। ग्रासरूट लेवल से टॉप लेवल तक करप्शन की सारी बातें होती हैं। अगर रेलवे के अंदर सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था होगी तो रेलवे के भीतर चलने वाली गतिविधियों को हम रोक सकते हैं। ऐसी कई बातें हैं, जैसे एक पालिसी-ड्रिवन स्टेट हो, टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग हो और करप्ट लोगों के लिए कठोर से कठोर कार्रवाई करने की व्यवस्था हो, तो मुझे विश्वास है कि हम स्थितियों को बदल सकते हैं।

हम चाहें या न चाहें, देश में हमारे इन सदनों की गरिमा पर चोट लगी हुई है। एक व्यापक चर्चा है कि संसद में वे लोग

जाते हैं जिनका criminal बैकग्राउंड होता है। पाँच हों, सात हों, दस हों लेकिन एक छवि बनी हुई है। यह हम लोगों की सामूहिक जिम्मेवारी है कि हम इस कलंक से हमारे इन दोनों सदनों को मुक्त करें और कलंक से मुक्त करने का एक अच्छा उपाय है कि हम सब मिलकर तय करें, भारत के सुप्रीम कोर्ट से रिक्वेस्ट करें कि अभी जितने हमारे सदस्य हैं, उनमें से किसी पर भी यदि एफआईआर लॉज हुई है, तो ज्यूडिशियल मैकेनिज्म के द्वारा उसको एक्सपिडाइट किया जाए और एक साल के भीतर-भीतर दूध का दूध और पानी को पानी होना चाहिए। जो गुनहगार हो, वह जेल चला जाए, जो निर्दोष हों, वे बेदाग होकर वे दुनिया के सामने खड़े हो जाएँ। क्यों राजनीतिक कारणों से इतने गुनाह रजिस्टर होते हैं, कई निर्दोष लोग मारे जाते हैं? हम देश और दुनिया को बताएँ कि कम से कम 2015 के अंदर हम एक ऐसे हिन्दुस्तान को सदन में देखेंगे, चाहे वह लोक सभा हो या राज्य सभा हो, जहाँ पर बैठा हुआ कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिस पर कोई दाग लगा होगा। दुनिया के अंदर हम एक शुरुआत कर सकते हैं। अगर हम इस प्रकार से एक बार लोक सभा को क्लीन कर दें तो फिर राजनीतिक दलों को भी टिकटें देते समय 50 बार सोचना पड़ेगा। अगर हम एक साल के भीतर यह सफाई कर देते हैं तो सीटें खाली होने लगेंगी, कोई हिम्मत नहीं करेगा। यह क्रम बाद में असेम्बलीज़ में ले जाया जाए और फिर धीरे-धीरे कॉर्पोरेशन में ले जाया जाए। जब एक बार माहौल बन जाएगा और वह सर्वसम्मति से बनेगा तो हम राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त कर सकते हैं। इसकी शुरुआत करने का यह सही तरीका है। इसलिए राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में इस बात का भी उल्लेख किया गया है। मैं नहीं मानता हूँ कि कोई ऐसा भी होगा, जो इससे मुक्ति न चाहता हो। जिस पर एफआईआर होगी, वह भी कहेगा- साहब, यह तलवार 15 साल से लटक रही है, हर बार मुझे नामांकन करते समय लिखना पड़ता है, हर बार एनजीओ के द्वारा अखबार में छपता है कि इसके ऊपर 30 गुनाह हैं, इसके ऊपर 25 गुनाह हैं। इससे हर कोई मुक्ति चाहता है। हम न्याय की प्रक्रिया को इस प्रकार से संचालित करें।

मैं मानता हूँ कि सभी सदस्य, चाहे वे लोक सभा के हों, राज्य सभा के हों, ये सब मिलकर इस बात के लिए सहयोग करेंगे और हम उसे दिशा में सुप्रीम कोर्ट की मदद लेकर जो गुनाहगार हैं उसके लिए जेल हो, जो बेगुनाह हों वह बेदाग दुनिया के सामने प्रस्तुत हो, उसकी व्यवस्था हमें करनी चाहिए। और इन दो सदनों में वह सामर्थ्य है कि ये उस काम को कर सकते हैं। ऐसे अनेक विषय हैं।

हम लोग यहां से शुरुआत करें और उसके बाद बाकी हो जाएगा। लेकिन मैं आपकी भावना का आदर करता हूँ कि कोई बचना नहीं चाहिए। कानून का राज होना चाहिए, बेगुनाहों को सुरक्षा मिलनी चाहिए और गुनाहगारों को सजा मिलनी चाहिए। इसीलिए तो अभी तो जो ब्लैक मनी के लिए दो साल से एस.आई.टी. बनाना लटक रहा था, हमने आते ही उस काम को कर दिया। उस काम को कर दिया, क्योंकि यह हमारी प्राथमिकता है। हम में से कोई नहीं जानता कि वे ब्लैक मनी वाले कौन हैं, लेकिन देश की जनता के सामने यह सत्य आना जरूरी है कि ब्लैक मनी है या नहीं है, तो किसकी है, तो कितनी है, कैसे आई और कहां गई, देश को पता तो चले और अगर नहीं है तो देश से इस प्रकार का धुंआ हट जाएगा। देश एक शांति का आनंद लेगा, इसलिए ऐसे कामों में कोताही बरते बिना हिम्मत के साथ आगे बढ़ना चाहिए और अगर हम आगे बढ़ते हैं तो देश के सामान्य व्यक्ति की संसद के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी, लोकतंत्र के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ेगी और सरकारी व्यवस्था में वह भरोसा करने लगेगा।

आज देश के सामने सबसे बड़ा संकट है कि उसका भरोसा टूट गया है और यह भरोसा इस हद तक टूटा है कि यहां बैठे हुए लोग भी कभी मोबाइल फोन से किसी को एस.एम.एस करते होंगे और बाद में फोन करते होंगे कि मेरा एसएमएस मिला? क्यों? भरोसा टूट गया है। भरोसा टूट गया, वरना भरोसा होना चाहिए कि मेरे मोबाइल से मैंने एस.एम.एस भेजा है तो गया ही होगा। लेकिन फोन करके पूछता है कि मैंने कोई एस.एम.एस किया था, वह मिला क्या? यह जो भरोसा टूट गया है उसको पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। सरकारी अस्पताल में गया तो उसको विश्वास होना चाहिए कि उसकी बीमारी ठीक होगी। बच्चा सरकारी स्कूल में गया तो मां-बाप को भरोसा होना चाहिए कि उसकी पढ़ाई में कोई तकलीफ नहीं होगी, यह भरोसा होना चाहिए और यह भरोसा पैदा करना एक बहुत बड़ा चैलेंज है, लेकिन हम मिल बैठकर उस काम को करें, तो कर सकते हैं। आप सबने जो सुझाव दिए हैं, सभी सुझाव हमारे लिए सम्माननीय हैं और मैं कहता हूँ और मैं बड़ी नम्रता के साथ कहता हूँ, भले ही हम विजयी होकर आए हों, भले ही देश की जनता ने कई वर्षों के बाद हमारा इतना बड़ा समर्थन किया, लेकिन अगर आपका समर्थन नहीं, तो वह समर्थन अधूरा है, और इसलिए हम आपको साथ लेकर चलना चाहते हैं। जरूरत पड़ी तो आपके मार्गदर्शन में चलना चाहते हैं और यह कोई नई बात नहीं है। जब नरसिंह राव जी की सरकार थी, जेनेवा के अंदर एक कांफ्रेंस में जाना था, पाकिस्तान के खिलाफ एक लॉबीइंग करने की आवश्यकता थी और नरसिंह राव जी ने अटल बिहारी वाजपेयी जी को पसंद किया और उनको डेलीगेशन के रूप में भेजा था और उसका काम को किया था। तो सारी जो अच्छी बातें हैं उन बातों को हमें आगे बढ़ाना है और इसलिए हम देश के लिए काम करने वाले लोग हैं। दल से बड़ा देश होता है, इस मंत्र को लेकर चलना है और इस पवित्र सदन में उस मंत्र को उजागर करने के लिए हम लोग प्रयास करेंगे। आपका सहयोग रहेगा तो समस्याओं का समाधान करने की सुविधा और ज्यादा तेज होगी। राजनीति करने के लिए आखिरी वर्ष काफी होता है, अभी तो चार साल सिर्फ राष्ट्र हित के लिए सोचें, राष्ट्रनीति के लिए सोचें। जय और पराजय में कड़वाहट आई है, उसको बाहर रख करके आएं। आती है कड़वाहट। इतनी कड़वाहट के साथ आगे

बढ़ने की जरूरत नहीं है और यह तो वरिष्ठ गृह है, वरिष्ठ गृह का माहौल एक उमंग और उत्साह का होना चाहिए, उसको बरकरार करने के लिए हम कोशिश करेंगे।

मुझे विश्वास है कि देश के सपनों को पूरा करने के लिए सिर्फ विजयी लोग ही नहीं, चुने हुए सब लोगों का जो दायित्व होता है, उस दायित्व को पूरा करने में हम पीछे नहीं रहेंगे। फिर एक बार, सदन के सामने अपनी बात रखने का मुझे अवसर मिला, मैं आपका आभारी हूँ और मैं पूरे सदन से प्रार्थना करता हूँ कि जो प्रस्ताव आपके सामने रखा गया है, उस प्रस्ताव का सर्वसम्मति से समर्थन करते हुए देश को हम नई दिशा दें, नई ताकत दें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

धीरज सिंह / अमित कुमार / सुरेन्द्र कुमार, रजनी, सोनिका, लक्ष्मी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

11-जून-2014 18:47 IST

लोकसभा में माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर 'धन्यवाद प्रस्ताव' के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गये वक्तव्य का मूल पाठ

माननीय अध्यक्ष जी, इस सदन में पहली बार, मेरा प्रवेश भी नया है और भाषण का अवसर भी पहली बार मिला।.... (व्यवधान)

इस सदन की गरिमा, परंपराएं बहुत ही उच्च रही हैं। इस सदन में काफी अनुभवी तीन-चार दशक से राष्ट्र के सवाल को उजागर करने वाले, सुलझाने वाले, लगातार प्रयत्न करने वाले वरिष्ठ महानुभाव भी विराजमान हैं। जब मुझे जैसा एक नया व्यक्ति कुछ कह रहा है, सदन की गरिमा और मर्यादाओं में कोई चूक हो जाए तो नया हाने के नाते आप मुझे क्षमा करेंगे, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। महामहिम राष्ट्रपतिजी के अभिभाषण पर लोकसभा में 50 से अधिक आदरणीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं। मैंने सदन में रहते हुए और कुछ अपने कमरे में करीब-करीब सभी भाषण सुने हैं।

आदरणीय मल्लिकार्जुन जी, आदरणीय मुलायम सिंह जी, डॉ० थम्बीदुराई जी, भर्तृहरि जी, टी.एम.सी. के नेता तथा सभी वरिष्ठ महानुभावों को मैंने सुना। एक बात सही है कि एक स्वर यह आया है कि आपने इतनी सारी बातें बताई हैं, इन्हें कैसे करोगे, कब करोगे। मैं मानता हूँ कि सही विषय को स्पर्श किया है और यह मन में आना बहुत स्वाभाविक है। मैं अपना एक अनुभव बताता हूँ, मैं नया-नया गुजरात में मुख्यमंत्री बनकर गया था और एक बार मैंने सदन में कह दिया कि मैं गुजरात के गाँवों में, घरों में 24 घंटे बिजली पहुँचाना चाहता हूँ। खैर ट्रेजरी बैंक ने बहुत तालियाँ बजाईं, लेकिन सामने की तरफ सन्नाटा था। लेकिन हमारे जो विपक्ष के नेता थे, चौधरी अमर सिंह जी, वह कांग्रेस के वरिष्ठ नेता थे, बड़े सुलझे हुए नेता थे। वह बाद में समय लेकर मुझे मिलने आए। उन्होंने कहा कि मोदी जी, कहीं आप की कोई चूक तो नहीं हो रही है, आप तो नए हो, आपका अनुभव नहीं है, यह 24 घंटे बिजली देना इम्पासिबल है, आप कैसे दोगे? एक मित्र भाव से उन्होंने इस पर चिंता व्यक्त की थी। मैंने उनसे कहा कि मैंने सोचा है और मुझे लगता है कि हम करेंगे। वह बोले संभव ही नहीं है। दो हजार मेगावाट अगर डेफिसिट है तो आप कैसे करोगे? उनके मन में वह विचार आना बड़ा स्वाभाविक था। लेकिन मुझे इस बात का आनंद है कि वह काम गुजरात में हो गया था। अब इसलिए यहाँ बैठे हुए सभी वरिष्ठ महानुभावों के मन में सवाल आना बहुत स्वाभाविक है कि अभी तक नहीं हुआ, अब कैसे होगा? अभी तक नहीं हुआ, इसलिए शक होना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन मैं इस सदन को विश्वास दिलाता हूँ कि राष्ट्रपतिजी ने जो रास्ता प्रस्तुत किया है, उसे पूरा करने में हम कोई कोताही नहीं बरतेंगे। हमारे लिए राष्ट्रपति जी का अभिभाषण सिर्फ परंपरा और रिचुअल नहीं है। हमारे लिए उनके माध्यम से कही हुई हर बात एक सैंक्रिटि है, एक पवित्र बंधन है और उसे पूरा करने का हमारा प्रयास भी है और यही भावना हमारी प्रेरणा भी बन सकती है, जो हमें काम करने की प्रेरणा दे। इसलिए राष्ट्रपतिजी के अभिभाषण को आने वाले समय के लिए हमने हमेशा एक गरिमा देनी चाहिए, उसे गंभीरता भी देनी चाहिए और सदन में हम सब ने मिलकर उसे पूर्ण करने का प्रयास करना चाहिए।

जब मतदान हुआ, मतदान होने तक हम सब उम्मीदवार थे, लेकिन सदन में आने के बाद हम जनता की उम्मीदों के दूत हैं। तब तो हम उम्मीदवार थे, लेकिन सदन में पहुँचने के बाद हम जनता की उम्मीदों के रखवाले हैं। किसी का दायित्व दूत के रूप में उसे परिपूर्ण करना होगा, किसी का दायित्व अगर कुछ कमी रहती है तो रखवाले बनकर पूरी आवाज उठाना, यह भी एक उत्तम दायित्व है। हम सब मिलकर उस दायित्व को निभायेंगे।

मुझे इस बात का संतोष रहा कि अधिकतम इस सदन में जो भी विषय आए हैं, छोटी-मोटी नौक-झोंक तो आवश्यक भी होती है लेकिन पूरी तरह सकारात्मक माहौल नजर आया। यहाँ भी जो मुद्दे उठाए गए, उनके भीतर भी एक आशा थी, एक होप थी। यानी देश के सवा सौ करोड़ नागरिकों ने जिस होप के साथ इस संसद को चुना है, उसकी प्रतिध्वनि इस तरफ बैठे हों या उस तरफ बैठे हुए हों, सबकी बातों में मुखर हुई है, यह मैं मानता हूँ।

यह भारत के भाग्य के लिए एक शुभ संकेत है। राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में चुनाव, मतदाता, परिणाम की सराहना की है। मैं भी देशवासियों का अभिनंदन करता हूँ, उनका आभार व्यक्त करता हूँ कि कई वर्षों के बाद देश ने स्थिर शासन के लिए, विकास के लिए, सुशासन के लिए, मत दे कर 5 साल के लिए विकास की यात्रा को सुनिश्चित किया है। भारत के

मतदाताओं की ये चिंता, उनका यह चिंतन और उन्होंने हमें जो जिम्मेवारी दी है, उसको हमें परिपूर्ण करना है। लेकिन हमें एक बात सोचनी होगी कि दुनिया के अंदर भारत एक बड़ा लोकतांत्रिक देश है, इस रूप में तो कभी-कभार हमारा उल्लेख होता है। लेकिन क्या समय की माँग नहीं है कि विश्व के सामने हम कितनी बड़ी लोकतांत्रिक शक्ति हैं, हमारी लोकतांत्रिक परंपराएं कितनी ऊँची हैं, हमारे सामान्य से सामान्य, अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति की रंगों में भी लोकतंत्र के प्रति श्रद्धा कितनी अपार है। अपनी सारी आशा और आकांक्षाओं को लोकतांत्रिक परंपराओं के माध्यम से परिपूर्ण करने के लिए वह कितना जागृत है। क्या कभी दुनिया में, हमारी इस ताकत को सही रूप में प्रस्तुत किया गया है? इस चुनाव के बाद हम सबका एक सामूहिक दायित्व बनता है कि विश्व को डंके की चोट पर हम यह समझाएं। विश्व को हम प्रभावित करें। पूरा यूरोप और अमरीका मिल कर जितने मतदाता हैं, उससे ज्यादा लोग हमारे चुनावों में शरीक होते हैं। यह हमारी कितनी बड़ी ताकत है। क्या विश्व के सामने, भारत के इस सामर्थ्यवान रूप को कभी हमने प्रकट किया है? मैं मानता हूँ कि यह हम सब का दायित्व बनता है। यह बात सही है कि कुछ वैक्युम है। 1200 साल की गुलामी की मानसिकता हमें परेशान कर रही है। बहुत बार हमसे थोड़ा ऊँचा व्यक्तिमिले तो, सर ऊँचा करके बात करने की हमारी ताकत नहीं होती है। कभी-कभार चमड़ी का रंग भी हमें प्रभावित कर देता है। उन सारी बातों से बाहर निकल कर भारत जैसा सामर्थ्यवान लोकतंत्र और इस चुनाव में इस प्रकार का प्रगट रूप, अब विश्व के सामने ताकतवर देश के रूप में प्रस्तुत होने का समय आ गया है। हमें दुनिया के सामने सर ऊँचा कर, आँख में आँख मिला कर, सीना तान कर, भारत के सवा सौ करोड़ नागरिकों के सामर्थ को प्रकट करने की ताकत रखनी चाहिए और उसको एक एजेंडा के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। भारत का गौरव और गरिमा इसके कारण बढ़ सकते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदया, यह बात सही है इस देश पर सबसे पहला अधिकार किसका है? सरकार किसके लिए होनी चाहिए? क्या सरकार सिर्फ पढ़े-लिखे लोगों के लिए हो? क्या सरकार सिर्फ इने-गिने लोगों के लाभ के लिए हो? मेरा कहना है किसरकार गरीबों के लिए होनी चाहिए। अमीर को अपने बच्चों को पढ़ाना है तो वह दुनिया का कोई भी टीचर हायर कर सकता है। अमीर के घर में कोई बीमार हो गया तो सैकड़ों डॉक्टर तेहरात में आ कर खड़े हो सकते हैं, लेकिन गरीब कहाँ जाएगा?

उसके नसीब में तो वह सरकारी स्कूल है, उसके नसीब में तो वह सरकारी अस्पताल है और इसीलिए सब सरकारों का यह सबसे पहला दायित्व होता है कि वे गरीबों की सुनें और गरीबों के लिए जियें। अगर हम सरकार का कारोबार गरीबों के लिए नहीं चलाते हैं, गरीबों की भलाई के लिए नहीं चलाते हैं तो देश की जनता हमें कतई माफ नहीं करेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदया जी यह इस सरकार की पहली प्राथमिकता है। हम तो पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी के आदर्शों से पले हुए लोग हैं। जिन्होंने हमें अंत्योदय की शिक्षा दी थी। गाँधी, लोहिया और दीन दयाल जी, तीनों के विचार सूत्र को हम पकड़े हैं, तो आखिरी मानविकी छोर पर बैठे हुए इंसान के कल्याण का काम इस शताब्दी के राजनीतिके इन तीनों महापुरुषों ने हमें एक ही रास्ता दिखाया है किसमोज के आखिरी छोर पर जो बैठा हुआ इन्सान है, उसके कल्याण को प्राथमिकता दी जाए। यह हमारी प्रतिबद्धता है। अंत्योदय का कल्याण, यह हमारी प्रतिबद्धता है। गरीब को गरीबी से बाहर लाने के लिए उसके अंदर वह ताकत लानी है जिससे वह गरीबी के खिलाफ जूझ सके। गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने का सबसे बड़ा औजार होता है- 'शिक्षा'। गरीबी से लड़ने का सबसे बड़ा साधन होता है- 'अंधश्रद्धा से मुक्ति'। अगर गरीबों में अंधश्रद्धा के भाव पड़े हैं, अशिक्षा की अवस्था पड़ी है, अगर हम उसमें से उसे बाहर लाने में सफल होते हैं, तो इस देश का गरीब किसी के टुकड़ों पर पलने की इच्छा नहीं रखता है। वह अपने बलबूते पर अपनी दुनिया खड़ी करने के लिए तैयार है। सम्मान और गौरव से जीना गरीब का स्वभाव है। अगर हम उसकी उस मूलभूत ताकत को पकड़कर उसे बल देने का प्रयास करते हैं और इसलिए सरकार की योजनाएं गरीब को गरीबी से बाहर आने की ताकत दें। गरीब को गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने की ताकत दें। शासन की सारी व्यवस्थायें गरीब को सशक्त बनाने के लिए काम आनी चाहिए और सारी व्यवस्थाओं का अंतिम नतीजा उस आखिरी छोर पर बैठे हुए इंसान के लिए काम में आए उस दिशा में प्रयास होगा, तब जाकर उसका कल्याण हम कर पाएंगे।

हम सदियों से कहते आए हैं किहमारा देश कृषिप्रधान देश है, यह गाँवों का देश है। ये नारे तो बहुत अच्छे लगे, सुनना भी बहुत अच्छा लगा, लेकिन क्या हम आज अपने सीने पर हाथ रखकर कह सकते हैं किहम हमारे गाँव के जीवन को बदल पाए हैं, हमारे किसानों के जीवन को बदल पाए हैं। यहाँ मैं किसी सरकार की आलोचना करने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूँ। यह हमारा सामूहिक दायित्व है कि भारत के गाँवों के जीवन को बदलने के लिए उसको हम अग्रिमता दें, किसानों के जीवन को बदलने के लिए उसको अग्रिमता दें। राष्ट्रपतिजी के अभिभाषण में उस बात को करने के लिए हमने कोशिश की है। यहाँ एक विषय ऐसा भी आया कि कैसे करेंगे? हमने एक शब्द प्रयोग किया है 'Rurban'। गाँवों के विकास के लिए जो राष्ट्रपतिके अभिभाषण में हमने देखा है। जहाँ सुविधा शहर की हो, आत्मा गाँव की हो। गाँव की पहचान गाँव की आत्मा में बनी हुई है। आज भी वह अपनापन, गाँव में एक बारात आती है तो पूरे गाँव को लगता है किहमारे गाँव की बारात है। गाँव में एक मेहमान आता है तो पूरे गाँव को लगता है कियह हमारे गाँव का मेहमान है। यह हमारे देश की एक अनमोल

विरासत है। इसको बनाना है, इसको बचाये रखना है, लेकिन हमारे गाँव के लोगों को आधुनिक सुविधा से हम वंचित रखेंगे क्या? मैं अनुभव से कहता हूँ कि अगर गाँव को आधुनिक सुविधाओं से सज्ज किया जाये तो गाँव देश की प्रगतिमें ज्यादा कांट्रिब्यूशन कर रहा है।

अगर गाँव में भी 24 घंटे बिजली हो, अगर गाँव को भी ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी मिले, गाँव के बालक को भी उत्तम से उत्तम शिक्षा मिले; पल भर के लिए मान लें कि शायद हमारे गाँव में अच्छे टीचर न हों, लेकिन आज का विज्ञान हमें लाँग डिस्टेंस एजुकेशन के लिए पूरी ताकत देता है। शहर में बैठकर भी उत्तम से उत्तम शिक्षक के माध्यम से गाँव के आखिरी छोर पर बैठे हुए स्कूल के बच्चे को हम पढ़ा सकते हैं। हम सैटेलाइट व्यवस्था का उपयोग, उस आधुनिक विज्ञान का उपयोग उन गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए क्यों न करें? अगर गाँव के जीवन में हम यह बदलाव लाएँ तो किसी को भी अपना गाँव छोड़कर जाने का मन नहीं करेगा। गाँव के नौजवान को क्या चाहिए? अगर रोजगार मिल जाए तो वह अपने माँ-बाप के पास रहना चाहता है। क्या गाँवों के अंदर हम उद्योगों का जाल खड़ा नहीं कर सकते हैं? एट लीस्ट हम एक बात पर बल दें- एगो बेस्ड इंडस्ट्रीज़ पर। अगर हम मूल्यवृद्धिकरें और मूल्यवृद्धिपर अगर हम बल दें। आज उसकी एक ताकत है, उस ताकत को हमने स्वीकार किया तो हम गाँव के आर्थिक जीवन को भी, गाँव की व्यवस्थाओं के जीवन को भी बदल सकते हैं और किसान का स्वाभाविक लाभ भी उसके साथ जुड़ा हुआ है।

सिक्किम एक छोटा सा राज्य है, बहुत कम आबादी है लेकिन उस छोटे से राज्य ने एक बहुत महत्वपूर्ण काम किया है। बहुत ही निकट भविष्य में सिक्किम प्रदेश हिन्दुस्तान के लिए गौरव देने वाला 'ऑर्गेनिक स्टेट' बनने जा रहा है। वहाँ का हर उत्पादन ऑर्गेनिक होने वाला है। आज पूरे विश्व में ऑर्गेनिक खेत उत्पादन की बहुत बड़ी माँग है। होलिस्टिक हैल्थकेयर की चिन्ता करने वाला एक पूरा वर्ग है दुनिया में, जो जितना माँगो उतना दाम देकर ऑर्गेनिक चीजें खरीदने के लिए कतार में खड़ा है। यह ग्लोबल मार्केट को कैप्चर करने के लिए सिक्किम के किसानों ने जो मेहनत की है, उसको जोड़कर अगर हम इस योजना को आगे बढ़ाएँ तो दूर-सुदूर हिमालय की गोद में बैठा हुआ सिक्किम प्रदेश कितनी बड़ी ताकत के साथ उभर सकता है। इसलिए क्या कभी हम सपना नहीं देख सकते हैं कि हमारे पूरे नॉर्थ ईस्ट को ऑर्गेनिक स्टेट के रूप में हम कैसे उभार सकें। पूरे नॉर्थ ईस्ट को अगर ऑर्गेनिक स्टेट के रूप में हम उभारें और विश्व के मार्केट पर कब्ज़ा करने के लिए भारत सरकार की तरफ से उनको मदद मिले तो वहाँ दूर पहाड़ों में रहने वाले लोगों की जिन्दगी में, कृषिके जीवन में कितना बड़ा बदलाव आ सकता है। हमारी इतनी कृषियूनिवर्सिटीज़ हैं। बहुत रिसर्च हो रही है, लेकिन यह दुर्भाग्य रहा है कि जो लैब में है, वह लैण्ड पर नहीं है। लैब से लैण्ड तक की यात्रा में जब तक हम उस पर बल नहीं देंगे, आज कृषिको परंपरागत कृषिसे बाहर लाकर आधुनिक कृषि की ओर ले जाने की आवश्यकता है। गुजरात ने एक छोटा सा प्रयोग किया था- सॉयल हैल्थ कार्ड। हमारे देश में मनुष्य के पास भी अभी हैल्थ कार्ड नहीं है। लेकिन गुजरात में हमने एक इनीशियेटिव लिया था। उसकी जमीन की तबीयत का उसके पास कार्ड रहे। उसके कारण से पता चला कि उसकी जमीन जिस क्रॉप के लिए उपयोगी नहीं है, वह उसी फसल के लिए खर्चा कर रहा था। जिस फर्टिलाइज़र की जरूरत नहीं है, उतनी मात्रा में वह फर्टिलाइज़र डालता था। जिन दवाइयों की कतई जरूरत नहीं थी, वह दवाइयाँ लगाता था। बेकार ही साल भर में 50 हजार रुपये या लाख रुपये यूँ ही फेंक देता था। लेकिन सॉयल हैल्थ कार्ड के कारण उसको समझ आई कि उसकी कृषिको कैसे लिया जाए। क्या हम हिन्दुस्तान के हर किसान को सॉयल हैल्थ कार्ड देने का अभियान पूर्ण नहीं कर सकते? हम इसको कर सकते हैं। सॉयल टैस्टिंग के लिए भी हम अध्ययन के साथ कमाई का एक नया आयाम ले सकते हैं। जो लोग मुझसे पूछ रहे हैं कि कैसे करेंगे, मैं इसलिए एक विषय को लंबा खींचकर बता रहा हूँ कि कैसे करेंगे?

हमारे एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स अप्रैल, मई और जून में गाँव जाते हैं और पूरे हिन्दुस्तान में 10+2 के जो स्कूल्स हैं, जिनमें एक लैबोरेटरी होती है। क्यों न वैकेशन में उन लैबोरेटरीज को 'सॉयल टैस्टिंग लैबोरेटरीज़' में कनवर्ट किया जाए। एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स जो वैकेशन में अपने गाँव जाते हैं उनको स्कूलों के अंदर काम में लगाया जाए और वैकेशन के अंदर वे अपना सॉयल टैस्टिंग का काम उस लैबोरेटरी में करें। उस स्कूल को कमाई होगी और उसमें से अच्छी लैबोरेटरी बनाने का इरादा बनेगा। एक जन आंदोलन के रूप में इसे परिवर्तित किया जा सकता है या नहीं किया जा सकता है? कहने का तात्पर्य यह है कि हम छोटे-छोटे प्रायोगिक उपाय करेंगे तो हम चीजों को बदल सकते हैं।

आज हमारे रेलवे की आदत क्या है? वह लकीर के फकीर हैं। उनको लिखा गया है कि मंडे को जो माल आए, वह एक वीक के अंदर चला जाना चाहिए। अगर मंडे को मार्बल आया है स्टेशन पर, जिसे मुम्बई पहुँचाना है और ट्यूजडे को टमाटर आया है, तो वह पहले मार्बल भेजता है, बाद में टमाटर भेजता है। क्यों? मार्बल अगर चार दिन बाद पहुँचेगा तो क्या फर्क पड़ता है, लेकिन अगर टमाटर पहले पहुँचता है तो कम से कम वह खराब तो नहीं होगा। हमें अपनी पूरी व्यवस्था को सैंसेटाइज़ करना है।

आज हमारे देश का दुर्भाग्य है, इंफोर्मेशन टेक्नोलॉजी के नाम पर दुनिया में हम छाये हुए रहें, साफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में हमारी पहचान बन गई लेकिन आज हमारे देश के पास एगो प्रोडक्ट का रियल टाइम डाटा नहीं है। क्या हम इंफोर्मेशन

टेक्नोलॉजी के नेटवर्क के माध्यम से एगो प्रोडक्ट का रियल डाटा इकट्ठा कर सकते हैं? हमने महँगाई को दूर करने का वायदा किया है और हम इस पर प्रमाणिकता से प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और यह इसलिए नहीं किया केवल चुनावी वायदा था इसलिए करना है, यह हमारी सोच है कि गरीब के घर में शाम को चूल्हा जलना चाहिए। गरीब के बेटे आँसू पीकर के सो जाएं, इस स्थिति में बदलाव आना चाहिए। यह हम सभी का कर्तव्य है चाहे राज्य सरकार हो या राष्ट्रीय सरकार हो, सत्ता में हो या विपक्ष में हो। हम सभी का सामूहिक उत्तरदायित्व है कि हिन्दुस्तान का कोई भी गरीब भूखा न रहे। इस कर्तव्य की पूर्तिके लिए हम इस काम को करना चाहते हैं। अगर रियल टाइम डाटा हो तो आज भी देश में अन्न के भंडार पड़े हैं। ऐसा नहीं है कि अन्न के भंडार नहीं हैं, लेकिन व्यवस्थाओं की कमी है। अगर सरकार के पास यह जानकारी हो कि कहाँ जरूरत है, रेलवे का जब लल पीरियड हो उस समय उसे तभी शिफ्ट कर दिया जाए और वहाँ अगर गोदाम बनाए जाएं और वहाँ रख दिया जाए, तो इस समस्या का समाधान हो सकता है। फूड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया, सालों से एक ढाँचा चल रहा है। क्या उसे आधुनिक नहीं बनाया जा सकता है? प्रोक्योरमेंट का काम कोई और करे, रिजर्वेशन का काम कोई अलग करे, डिस्ट्रिब्यूशन का काम कोई अलग करे, एक ही व्यवस्था को अगर तीन हिस्सों में बाँट दिया जाए और तीनों की रिस्पॉसिबिलिटी बना दी जाए तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि हम इन स्थितियों को बदल सकते हैं।

एग्रीकल्चर सेक्टर में हमारी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटीज़ को, हमारे किसानों को, अभी एक बात पर बल देना पड़ेगा, यह समय की माँग है। जैसा मैंने आधुनिक खेती के बारे में कहा, हम टेक्नोलॉजी को एग्रीकल्चर में जितनी तेजी से लाएंगे उतना लाभ होगा क्योंकि परिवारों का विस्तार होता जा रहा है और जमीन कम होती जा रही है। हमें जमीन में प्रोडक्टिविटी बढ़ानी पड़ेगी। इसके लिए हमें अपनी यूनिवर्सिटीज़ में रिसर्च का काम बढ़ाना पड़ेगा। कितने वर्षों से Pulses में कोई रिसर्च नहीं हुआ है। Pulses हमारे सामने बहुत बड़ा चैलेंज बनी हुई हैं। आज गरीब आदमी को प्रोटीन पाने के लिए Pulses के अलावा कोई उपाय नहीं है। Pulses ही हैं, जिसके माध्यम से उसे प्रोटीन प्राप्त होता है और शरीर की रचना में प्रोटीन का बहुत महत्व होता है। अगर कुपोषण के खिलाफ लड़ाई लड़नी है तो हमें इन सवालों को एड्रेस करना होगा। Pulses के क्षेत्र में कई वर्षों से न हम प्रोडक्टिविटी में बढ़ावा ले पाए हैं और न ही Pulses के अंदर प्रोटीन कंटेंट के अंदर वृद्धि कर पाए हैं। हम शुगरकेन में शुगर कंटेंट बढ़ाने में सफल हुए हैं, लेकिन हम Pulses में प्रोटीन कंटेंट बढ़ाने में सफल नहीं हुए हैं। यह बहुत बड़ा चैलेंज है। क्या हमारे वैज्ञानिक, हमारी कृषियूनिवर्सिटीज़ को प्रेरित करेंगे? हम इन समस्याओं पर क्यूमलेटिव इफैक्ट के साथ अगर चीजों को आगे बढ़ाते हैं तो मैं मानता हूँ कि इन समस्याओं का समाधान हो सकता है। इसका यह रास्ता है।

हमारी माताएँ - बहनें जो हमारी पचास परसेंट की जनसंख्या है भारत की विकास यात्रा में, उन्हें निर्णय में, भागीदार बनाने की जरूरत है। उन्हें हमें आर्थिक प्रगति से जोड़ना होगा। विकास की नई ऊँचाइयों को पार करना है तो हिंदुस्तान की पचास प्रतिशत हमारी मातृ शक्ति है, उसकी सक्रिय भागीदारी को हमें निश्चित करना होगा। उनके सम्मान की चिंता करनी होगी, उनकी सुरक्षा की चिंता करनी होगी।

पिछले दिनों जो कुछ घटनाएँ घटी हैं, हम सत्ता में हों या न हों, पीड़ा करने वाली घटना है। चाहे पुणे की हत्या हो, चाहे उत्तर प्रदेश में हुई हत्या हो, चाहे मनाली में डूबे हुए हमारे नौजवान हों, चाहे हमारी बहनों पर हुए बलात्कार हो, ये सारी घटनाएँ, हम सब को आत्मचिंतन करने के लिए प्रेरित करती हैं। सरकारों को कठोरता से काम करना होगा। देश लंबा इंतजार नहीं करेगा, पीड़ित लोग लंबा इंतजार नहीं करेंगे और हमारी अपनी आत्मा हमें माफ नहीं करेगी। इसलिए मैं तो राजनेताओं से अपील करता हूँ। मैं देश भर के राजनेताओं को विशेष रूप से करबद्ध प्रार्थना करना चाहता हूँ कि बलात्कार की घटनाओं का 'मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' करना कम से कम हम बंद करें। हमें शोभा नहीं देता है। हम माँ-बहनों की डिग्नटी पर खिलवाड़ करते हैं। हमें राजनीतिक स्तर पर, इस प्रकार की बयानबाजी करना शोभा देता है क्या? क्या हम मौन नहीं रह सकते? इसलिए नारी का सम्मान, नारी की सुरक्षा, यह हम सब की, सवा सौ करोड़ देशवासियों की प्राथमिकता होनी चाहिए।

इस देश की 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 से कम आयु की है। हम कितने सौभाग्यशाली हैं। हम उस युग चक्र के अंदर आज जीवित हैं। हम उस युग चक्र में संसद में बैठे हैं जब हिंदुस्तान दुनिया का सबसे नौजवान देश है। डेमोग्राफिक डिवीज़न- इस ताकत को हम पहचानें। पूरे विश्व को आने वाले दिनों में लेबर फोर्स की मैन पावर की Skilled मैनपावर की बहुत बड़ी आवश्यकता है। जो लोग इस शास्त्र के अनुभवी हैं, वे जानते हैं कि पूरे विश्व को Skilled मैनपावर की आवश्यकता है। हमारे पड़ोस में चीन बूढ़ा होता जा रहा है, हम नौजवान होते जा रहे हैं। यह एक एडवांटेज है। इसलिए दुनिया के सभी देश समृद्ध-से-समृद्ध देश का एक ही एजेंडा रहता है- स्किल डेवलपमेंट। हमारे देश की प्राथमिकता होनी चाहिए 'स्किल डेवलपमेंट'। उसके साथ-साथ हमें सफल होना है तो हमें 'श्रमेव जयते' - इस मंत्र को चरितार्थ करना होगा। राष्ट्र के निर्माण में श्रमिक का स्थान होता है। वह विश्वकर्मा है। उसका हम गौरव कैसे करें।

भाइयो-बहनो, भारत का एक परसेप्शन दुनिया में बन पड़ा है। हमारी पहचान बन गयी है 'स्कैम इंडिया' की। हमारे देश की

पहचान हमें बनानी है 'Skilled' इंडिया की और उस सपने को हम पूरा कर सकते हैं। इसलिए पहली बार एक अलग मंत्रालय बनाकर के- इंटरप्रेन्योरशिप एण्ड स्किल डेवलपमेंट- उस पर विशेष रूप से बल दिया गया है।

हमारे देश का एक दुर्भाग्य है। किसी से पूछा जाए कि क्या पढ़े-लिखे हो तो वह कहता है कि ग्रेजुएट हूँ, एम.ए. हूँ, डबल ग्रेजुएट हूँ। हमें अच्छा लगता है। मैंने बहुत बचपन में दादा धर्माधिकारी जी की एक किताब पढ़ी थी। महात्मा गांधी के विचारों के एक अच्छे चिंतक रहे, बिनोवा जी के साथ रहते थे। दादा धर्माधिकारी जी ने एक अनुभव लिखा था कि कोई नौजवान उनके पास नौकरी लेने गया। उन्होंने पूछा कि भाई, क्या करते हो, क्या पढ़े हो वगैरह। उसने कहा कि मैं ग्रेजुएट हूँ। फिर कहने लगा कि मुझे नौकरी चाहिए। दादा धर्माधिकारी जी ने उससे पूछा कि तुम्हें क्या आता है? उसने बोला- मैं ग्रेजुएट हूँ। फिर उन्होंने कहा- हाँ, हाँ भाई, तुम ग्रेजुएट हो, पर बताओ तुम्हें क्या आता है? उसने बोला- नहीं, नहीं! मैं ग्रेजुएट हूँ। चौथी बार पूछा कि तुम्हें बताओ क्या आता है। वह बोला मैं ग्रेजुएट हूँ। हम इस बात से अनुभव कर सकते हैं कि जिन्दगी का गुजारा करने के लिए हाथ में हुनर होना चाहिए, सिर्फ हाथ में सर्टिफिकेट होने से बात नहीं होती। इसलिए हमें स्किल डेवलपमेंट की ओर बल देना होगा, लेकिन स्किल्ड वर्कर जो हैं, उसका एक सामाजिक स्टेटस भी खड़ा करना पड़ेगा। सातवीं कक्षा तक पढ़ा हुआ बच्चा, गरीबी के कारण स्कूल छोड़ देता है। कहीं जा करके स्किल डेवलपमेंट के कोर्स का सौभाग्य मिला, चला जाता है, लेकिन लोग उसको महत्व नहीं देते, अच्छा सातवीं पढ़े हो, चले जाओ। हमें उसकी इक्वीवलेंट व्यवस्था खड़ी करनी पड़ेगी। मैंने गुजरात में प्रयोग किया था। जो दो साल की आईटीआई करते थे, मैंने उनको दसवीं के इक्वल बना दिया, जो दसवीं के बाद आए थे, उनको 12वीं के इक्वल बना दिया। उनको डिप्लोमा या आगे पढ़ना है तो रास्ते खोल दिए। डिग्री में जाना है तो रास्ते खोल दिए। सातवीं पास था, लेकिन डिग्री तक जा सकता है, रास्ते खोल दिए। बहुत हिम्मत के साथ नये निर्णय करने होंगे।

अगर हम स्किल डेवलपमेंट को बल देना चाहते हैं तो उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा पैदा करनी होगी। मैंने कहा कि दुनिया में वर्क फोर्स की आवश्यकता है। आज सारे विश्व को टीचर्स की आवश्यकता है। क्या हिन्दुस्तान टीचर एक्सपोर्ट नहीं कर सकता है। मैथ्स और साइंस के टीचर अगर हम दुनिया में एक्सपोर्ट करें, एक व्यापारी विदेश जाएगा तो ज्यादा से ज्यादा डालर लेकर आएगा, लेकिन एक टीचर विदेश जाएगा तो पूरी की पूरी पीढ़ी अपने साथ समेट करके ले आएगा। ये ताकत रखनी है। विश्व में हमारे सामर्थ्य को खड़ा करना है तो ये रास्ते होते हैं। क्या हम अपने देश में इस प्रकार के नौजवानों को तैयार नहीं कर सकते? ये सारी संभावनाएँ पड़ी हैं, उन संभावनाओं को ले करके अगर आगे चलने का हम इरादा रखते हैं तो मुझे विश्वास है कि हम परिणाम ला सकते हैं। दलित, पीड़ित, शोषित एवं वंचित हो।

हमारे दलित एवं वनवासी भाई-बहनों, क्या हम विश्वास से कह सकते हैं कि आजादी के इतने सालों के बाद उनके जीवन में हम बदलाव ला सके हैं। ऐसा नहीं है कि बजट खर्च नहीं हुए, कोई सरकार के पास गंभीरता नहीं थी। मैं ऐसा कोई किसी पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ, लेकिन हकीकत यह है कि स्थिति में बदलाव नहीं आया। क्या हम पुराने ढर्रे से बाहर आने को तैयार हैं? हम सरकार की योजनाओं को कन्वर्जेंस कर-करके, कम से कम समाज के इन तबकों को बाहर ला सकते हैं। क्यों नहीं उनके जीवन में बदलाव आ सकता है। मुसलमान भाई, मैं देखता हूँ, जब मैं छोटा था, जो साइकिल रिपेयरिंग करता था, आज उसकी तीसरी पीढ़ी का बेटा भी साइकिल रिपेयरिंग करता है। ऐसी दुर्दशा क्यों हुई? उनके जीवन में बदलाव कैसे आए? इस बदलाव के लिए हमें फोकस एक्टिविटी करनी पड़ेगी। उस प्रकार की योजनाओं को ले करके आना पड़ेगा। मैं उन योजनाओं को तुष्टीकरण के रूप में देखता नहीं हूँ, मैं उनके जीवन को बदलाव के रूप में देखता हूँ। कोई भी शरीर अगर उसका एक अंग विकलांग हो तो उस शरीर को कोई स्वस्थ नहीं मान सकता। शरीर के सभी अंग अगर सशक्त हों, तभी तो वह सशक्त शरीर हो सकता है। इसलिए समाज का कोई एक अंग अगर दुर्बल रहा तो समाज कभी सशक्त नहीं हो सकता है। इसलिए समाज के सभी अंग सशक्त होने चाहिए। उस मूलभूत भावना से प्रेरित हो करके हमें काम करने की आवश्यकता है और हम उससे प्रतिबद्ध हैं। हम उसको करना चाहते हैं। हमारे देश में विकास की एक नयी परिभाषा की ओर जाने की मुझे आवश्यकता लगी। क्या आजादी का आंदोलन, देश में आजादी की लड़ाई बारह सौ साल के कालखंड में कोई वर्ष ऐसा नहीं गया, जिसमें आजादी के लिए मरने वाले दीवाने न मिले हों। 1857 के बाद सारा स्वतंत्र संग्राम का इतिहास हमारे सामने है। हिन्दुस्तान का कोई भू-भाग ऐसा नहीं होगा, जहाँ से कोई मरने वाला तैयार न हुआ हो, शहीद होने के लिए तैयार न हुआ हो। सिलसिला चलता रहा था, फांसी के तख्त पर चढ़ करके देश के लिए बलिदान होने वालों की श्रृंखला कभी रुकी नहीं थी।

भाइयों और बहनों, आप में से बहुत लोग ऐसे होंगे, जो आजादी के बाद पैदा हुए होंगे। कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं, जो आजादी के पहले पैदा हुए होंगे, आजादी की जंग में लड़े भी होंगे। मैं आजादी के बाद पैदा हुआ हूँ। मेरे मन में विचार आता है। मुझे देश के लिए मरने का मौका नहीं मिला, लेकिन देश के लिए जीने का मौका तो मिला है। हम यह बात लोगों तक कैसे पहुँचाये कि हम देश के लिए जियें और देश के लिए जीने का एक मौका लेकर वर्ष 2022 में जब आजादी के 75 साल हों, देश के लिए जीवन न्यौछावर करने वाले उन महापुरुषों को याद करते हुए हम एक काम कर सकते हैं। बाकी सारे काम भी करने हैं, लेकिन एक काम जो प्रखरता से करें कि हिन्दुस्तान में कोई परिवार ऐसा न हो, जिसके पास रहने के लिए

अपना घर न हो। ऐसा घर जिसमें नल भी हो, नल में पानी भी हो, बिजली भी हो, शौचालय भी हो। यह एक मिनिमम बात है। एक आंदोलन के रूप में सभी राज्य सरकारें और केंद्र सरकार मिलकर, हम सभी सदस्य मिलकर अगर आठ-नौ साल का कार्यक्रम बना दें, धन खर्च करना पड़े, तो खर्च करें, लेकिन आजादी के 75 साल जब मनायें तब भगत सिंह को याद करके, सुखदेव को याद करके, राजगुरु को याद करके, महात्मा गाँधी, सरदार पटेल इन सभी महापुरुषों को याद करके उनको हम मकान दे सकते हैं। अगर हम इस संकल्प की पूर्तिकरके आगे बढ़ते हैं तो देश के सपनों को पूरा करने का काम हम कर सकते हैं।

मैं जानता हूँ किशासन में आने के बाद जिसको नापा जा सके, ऐसा कार्यक्रम हाथ में लेना बड़ा कठिन होता है। आदरणीय मुलायम सिंह जी ने कहा किमैंने सरकार चलायी है। सरकार चलायी है, इसलिए मैं कहता हूँ किभाई यह कैसे करोगे, यह कैसे होगा? उनकी सदभावना के लिए मैं उनका आभारी हूँ। उन्होंने चिन्ता व्यक्त की है, लेकिन हम मिल-बैठकर के रास्ता निकालेंगे। हम सपना तो देखे हैं, उसे पूरा करने का प्रयास करेंगे। कुछ कठिनाई आयेगी तो आप जैसे अनुभवी लोग हैं, जिनका मार्गदर्शन हमें मिलेगा। गरीब के लिए काम करना है, इसके लिए हमें आगे बढ़ना है।

यहाँ यह बात भी आयी, नयी बोटल में पुरानी शराब है। उनको शराब याद आना बड़ा स्वाभाविक है। यह भी कहा किये तो हमारी बातें हैं, आपने जरा ऊपर-नीचे करके रखी हैं, कोई नयी बात नहीं है। इसका मतलब यह है किजो हम कह रहे हैं, वह आपको भी पता था। कल से महाभारत की चर्चा हो रही है और मैं कहना चाहता हूँ कि एक बार दुर्योधन से पूछा गया किभाई यह धर्म और अधर्म, सत्य और झूठ तुमको समझ है कि नहीं है, तो दुर्योधन ने जवाब दिया था, उसने कहा किजानामिधर्मम् न च में प्रवृत्तिः, मैं धर्म को जानता हूँ, लेकिन यह मेरी प्रवृत्ति नहीं है। सत्य क्या है, मुझे मालूम है। अच्छा क्या है, मुझे मालूम है, लेकिन वह मेरे डीएनए में नहीं है। इसलिए आपको पहले पता था, आप जानते थे, आप सोचते थे, मुझे इससे ऐतराज नहीं है, लेकिन दुर्योधन को भी तो मालूम था। इसलिए जब महाभारत की चर्चा करते हैं, महाभारत लंबे अरसे से हमारे कानों में गूँजती रही है, सुनते आए हैं, लेकिन महाभारत काल पूरा हो चुका है। न पांडव बचे हैं, न कौरव बचे हैं, लेकिन जन-मन में आज भी पांडव ही विजयी हों, हमेशा-हमेशा भाव रहा है। कभी पांडव पराजित हों, यह कभी जन-मन का भाव नहीं रहा है।

भाइयों और बहनों, विजय हमें बहुत सिखाता है और हमें सीखना भी चाहिए। विजय हमें सिखाता है नम्रता, मैं इस सदन को विश्वास देता हूँ, मुझे विश्वास है कियहाँ के जो हमारे सीनियर्स हैं, चाहे वह किसी भी दल के क्यों नहीं, उनके आशीर्वाद से हम उस ताकत को प्राप्त करेंगे, जो हमें अहंकार से बचाये।

जो हमें हर पल नम्रता सिखाए। यहाँ पर कितनी ही संख्या क्यों न हो, लेकिन मुझे आपके बिना आगे नहीं बढ़ना है। हमें संख्या के बल पर नहीं चलना है, हमें सामूहिकता के बल पर चलना है इसलिए उस सामूहिकता के भाव को ले कर हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

इन दिनों मॉडल की चर्चा होती है- गुजरात मॉडल, गुजरात मॉडल। जिन्होंने मेरा भाषण सुना होगा उन्हें मैं बताता हूँ किगुजरात का मॉडल क्या है? गुजरात में भी एक जिले का मॉडल दूसरे जिले में नहीं चलता है क्योंकियह देश विविधताओं से भरा हुआ है। अगर मेरा कच्छ का रेगिस्तान है और वहाँ का मॉडल मैं वलसाड के हरे-भरे जिले में लगाऊंगा तो नहीं चलेगा। इतनी समझ के कारण तो गुजरात आगे बढ़ा है।..... (व्यवधान) यही उसका मॉडल है किजिसमें यह समझ है।..... (व्यवधान) गुजरात का दूसरा मॉडल यह है किहिन्दुस्तान के किसी भी कोने में अच्छा हो, उन अच्छी बातों से हम सीखते हैं, उन अच्छी बातों को हम स्वीकार करते हैं। आने वाले दिनों में भी हम उस मॉडल को ले कर आगे बढ़ना चाहते हैं, हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में अच्छा हुआ हो, जो अच्छा है, वह हम सबका है, उसको और जगहों पर लागू करने का प्रयास करना है।

कल तमिलनाडु की तरफ से बोला गया था कितमिलनाडु का मॉडल गुजरात के मॉडल से अच्छा है। मैं इस बात का स्वागत करता हूँ किइस देश में इतना तो हुआ किविकास के मॉडल की स्पर्द्धा शुरू हुई है।..... (व्यवधान) एक राज्य कहने लगा किमेरा राज्य तुम्हारे राज्य से आगे बढ़ने लगा है। मैं मानता हूँ किगुजरात मॉडल का यह सबसे बड़ा कॉण्ट्रिब्यूशन है किपहले हम स्पर्द्धा नहीं करते थे, अब कर रहे हैं। हम चाहते हैं किआने वाले दिनों में राज्यों के बीच विकास की प्रतिस्पर्द्धा हो। राज्य और केंद्र के बीच विकास की स्पर्द्धा हो। हर कोई कहे किगुजरात पीछे रह गया है और हम आगे निकल गए हैं। यह सुनने के लिए मेरे कान तरस रहे हैं। देश में यही होगा, तभी तो बदलाव आएगा। छोटे-छोटे राज्य भी बहुत अच्छा करते हैं। जैसा मैंने कहा है किसिक्किम, ऑर्गेनिक स्टेट बना है। तमिलनाडु ने अर्बन एरिया में रेन हार्वेस्टिंग का जो काम किया है, वह हम सब को सीखने जैसा है। माओवाद के जुल्म के बीच जीने वाले राज्य छत्तीसगढ़ ने पी.डी.एस. सिस्टम का एक नया नमूना दिया है और गरीब से गरीब व्यक्तिको पेट भरने के लिए उसने नई योजना दी है।..... (व्यवधान)

हमारी बहन ममता जी पश्चिम बंगाल को 35 साल की बुराइयों से बाहर लाने के लिए आज कितनी मेहनत कर रही हैं, हम उनकी इन बातों का आदर करते हैं। इसलिए हर राज्य में (व्यवधान) केरल से भी..... (व्यवधान) आप को जान कर खुशी होगी कि मैंने केरल के एक अफसर को बुलाया था। वह बहुत ही जूनियर ऑफिसर थे और वहाँ लेफ्ट की सरकार चल रही थी। उनकी आयु बहुत छोटी थी। मैंने अपने यहाँ एक चिंतन शिविर किया और मैं और मेरा पूरा मंत्री परिषद् एक स्टुडेंट के रूप में बैठा था। मैंने उनसे 'कुटुम्बश्री' योजना का अध्ययन किया था। उन्होंने हमें दो घंटे पढ़ाया।

मैंने नागालैण्ड के चीफ सेक्रेटरी को बुलाया था कि आइए मुझे पढ़ाइये। नागालैण्ड में ट्राइबल के लिए एक बहुत अच्छी योजना बनी थी। यही तो हमारे देश का मॉडल होना चाहिए। हिन्दुस्तान के कोने में किसी भी विचारधारा की सरकार क्यों न हो, उसकी अच्छाइयों का हम आदर करें, अच्छाइयों को स्वीकार करें।..... (व्यवधान) यही मॉडल देश के काम आएगा। हम बड़े भाई का व्यवहार कितुम कौन होते हो? तुम ले जाना दो-चार टुकड़े ऐसा नहीं चाहते हैं, हम मिल करके देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं, इसलिए हमने 'कॉंपरेटिव फेडरलिज्म' की बात की है। सहकारिता के संगठित स्वरूप को लेकर चलने की हमने बात की है और इसलिए एक ऐसे रूप को आगे बढ़ाने का हम लोगों का प्रयास है, उस प्रयास को लेकर आगे चलेंगे, ऐसा मुझे विश्वास है।

माननीय अध्यक्ष महोदया जी, यह जो प्रस्ताव रखा गया है, उसके लिए आज मैं सभी वरिष्ठ नेताओं का आभारी हूँ और कुल मिला कर कह सकता हूँ कि आज एक सार्थक चर्चा रही है और समर्थन में चर्चा रही है और अगर आलोचना भी हुई तो अपेक्षा के संदर्भ में हुई है। मैं इसे बहुत हेल्दी मानता हूँ, इसका स्वागत करता हूँ और आज किसी भी दल की तरफ से जो अच्छे सुझाव हमें मिले हैं उन्हें मैं अपनी आलोचना नहीं मानता हूँ, उन्हें मैं मार्गदर्शक मानता हूँ।

उसका भी हम उपयोग करेंगे, अच्छाई के लिए उपयोग करेंगे और लोकतंत्र में आलोचना अच्छाई के लिए होती है और होनी भी चाहिए। सिर्फ आरोप बुरे होते हैं आलोचना कभी बुरी नहीं होती है, आलोचना तो ताकत देती है। अगर लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकतवर कोई जड़ी-बूटी है तो वह आलोचना है। हम उस आलोचना के लिए सदा-सर्वदा के लिए तैयार हैं। मैं चाहूँगा हर नीतियों का अध्ययन करके गहरी आलोचना होनी चाहिए ताकि तप करके प्रखर होकर सोना निकले जो आने वाले दिनों में देश के लिए काम आए। उस भाव से हम चलना चाहते हैं।

आज नए सदन में मुझे अपनी बात बताने का अवसर मिला। आदरणीय अध्यक्ष महोदया जी, कहीं कोई शब्द इधर-उधर हो गया हो, अगर मैं नियमों के बंधन से बाहर चला गया हूँ तो यह सदन मुझे जरूर क्षमा करेगा। लेकिन मुझे विश्वास है कि सदन के पूरे सहयोग से, जैसे मैंने पहले कहा था, मतदान से पहले हम उम्मीदवार थे, मतदान के बाद हम उम्मीदों के रखवाले हैं, हम उम्मीदों के दूत हैं, सवा सौ करोड़ देशवासियों की उम्मीदों को पूरा करने का हम प्रयास करें। इसी एक अपेक्षा के साथ इसे आप सबका समर्थन मिले। इसी बात को दोहराते हुए आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद!

DS/SBP/SK

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

06-June-2014 19:40 IST

PM's welcome speech on election of Sumitra Mahajan as Speaker of Lok Sabha

आदरणीय अध्यक्ष महोदया जी, मैं इस सदन के सभी दलों का और सभी सदस्यों का हृदय पूर्वक अभिनंदन करता हूँ कि सदन की महान परंपरा के अनुसार सर्वसम्मतिसे अध्यक्ष महोदया का निर्वाचन हुआ है। हम सबके लिए ये गौरव का विषय है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के इस लोकतंत्र के मंदिर का उसकी व्यासपीठ पर एक महिला विराजित हो करके इसका पूरा संचालन करके राष्ट्र के सामान्य मानव की समस्याओं के समाधान के लिए आपका मार्गदर्शन बहुत मूल्यवान रहेगा। माननीय अध्यक्ष महोदया इस सदन के लिए इस बात का गर्व है कि आप इंदौर म्युनिसिपल कार्पोरेशन के सामान्य सदस्य से लेकर के कई दशकों तक सार्वजनिक जीवन में जन प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते करते इस सदन में पहुँचे और आठ बार इस सदन का सदस्य बनकर के आपका अनुभव इस सदन के सुचारू संचालन में बहुत ही उपकारक होने वाला है। अध्यक्ष महोदया जी ये 16वीं लोकसभा में एक ऐसा अवसर हमें प्राप्त हुआ है जो पहली लोक सभा का गठन हुआ था करीब- करीब वैसा ही एक अवसर हमें प्राप्त हुआ है। जब देश में पहली लोक सभा का गठन हुआ सभी सदस्य पहली बार आए थे, उसके बाद कई लंबे अरसे के बाद एक ऐसे सदन का गठन हुआ है जिसमें करीब 315 सदस्य पहली बार आए हैं। इसका तात्पर्य यह हुआ कि पुरानी कई परंपराओं को छोड़ करके भी अच्छी नए परंपराओं का आरंभ करते हुए विश्व जिस लोकतंत्र के प्रति आशा की नजर से देख रहा है वैसा एक नया रूप विश्व के सामने प्रस्तुत करने का अवसर इस सदन को प्राप्त हुआ है। पुरानी महान परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए ये जो नया रक्त आया है नयी उर्जा आयी है वो अपने आप में विश्व के सामने एक सशक्त लोकतंत्र, उसको प्रस्तुत करने का एक अवसर ये सदन से बनेगा। ये लोकतंत्र का मंदिर नए सदस्यों के उत्साह और उमंग के कारण ये राष्ट्र के विकास का उर्जा का मंदिर भी बन सकता है और आपकी अध्यक्षता में आपके मार्गदर्शन में ये सदन अवश्य उस आशा और आकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल होगा। माननीय अध्यक्ष महोदया जी आपके नाम में ही वो गुण ऐसे हैं कि सबको मित्रता की अनुभूति होगी। अपने पन की अनुभूति होगी और हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि- 'महाजन येन गता स पंथाः' महाजन जिस राह पर चलते हैं उस राह पर चलना अच्छा होता है और यहाँ तो महाजन स्वयं विराजित हैं; तो इस सदन को उस रास्ते पर चलना और भी उचित होगा। मैं आपको बहुत-बहुत शुभकामना देता हूँ और मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी आशा अपेक्षाओं के अनुरूप ये पूरा सदन आपके कार्य में सहयोग करते हुए भारत के सामान्य मानव की अपेक्षाओं की पूर्ति में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। मैं फिर एक बार आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ और सभी दलों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ, धन्यवाद करता हूँ जिनके समर्थन के कारण आज सर्वसमिति से हम इस परंपरा को निभा पाए हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

धीरज सिंह/नवनीत कौर/अनिल कुमार

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

27-जुलाई-2014 12:23 IST

राष्ट्रपति पद पर श्री प्रणब मुखर्जी के दो साल पूरे होने पर आयोजित समारोह में दो पुस्तकों के विमोचन के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन - मूल पाठ

"राष्ट्रपति जी के कार्यकाल के दो वर्ष पूर्ण हुए हैं। आपके मार्गदर्शन में देश को नयी दिशा मिली है, नयी प्रेरणा मिली है और मेरा व्यक्तिगत पिछले दो महीने का अनुभव बहुत ही उत्साहवर्धक रहा है। एक परिवार के मुखिया की तरह, मुझे जैसे एक नये व्यक्ति को हर पल आपका मार्गदर्शन मिला है और आपके कार्यकाल में भविष्य में भी देश बहुत ही प्रगति करेगा, विश्व में सम्मान प्राप्त करेगा, ऐसा मुझे पूरा भरोसा है। मैं आज के इस शुभ अवसर पर आदरणीय राष्ट्रपति जी को बहुत बहुत शुभकामनायें देता हूँ।

आज मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे दो पुस्तकों का लोकार्पण करने का अवसर मिला। और उसमें एक, उसकी ब्यूटी यह है की दो लोग हैं लिखने वाले जो इसी भवन से जुड़े हुए हैं। इसलिए वो सिर्फ संशोधन के कारण लिखा हुआ नहीं है, अनुभूति के द्वारा प्रकट हुई वो कृति है। संशोधन के कारण बनने वाली चीजें और अनुभूति से प्रकट होने वाली कृतियों में बहुत बड़ा अंतर होता है। मैनुफैक्चरिंग और क्रियेशन में जितना अंतर होता है उतना अंतर इन दो चीजों में रहता है। और मैं इन दोनों सृजकों को बहुत बहुत बड़ाई देता हूँ। दो किताबों का मूलमंत्र तो एक है, एक किताब उन लोगों के लिए है जो बुलाए हुए मेहमान हैं और दूसरी किताब उन के संबंध में है जो बिन बुलाए मेहमान हैं। वे मेहमान जो कलाकार थे और यहाँ पर किसी ने कभी परफॉर्म किया है उनकी सारी गाथा सुनाता है, और दूसरे वो हैं जो बिन बुलाए हैं लेकिन दुनिया के कई भूभागों से हैं, और देखने आते थे के देखें तो सही हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति भवन कैसा है, हिन्दुस्तान का सर्वोच्च स्थान कैसा है, उसको देखने के लिए आते थे।

कला और संस्कृति भारत की एक अनमोल धरोहर है। गुलामी के कालखंड में उसका गौरव-गान सीमित हो गया। आज़ादी की प्रमुख निशानियों में एक होती है, उसकी कला-संस्कृति कितनी व्यापक और तीव्रता से उजागर होती है। हमारे देश में कला और संस्कृति की विरासत इतनी है की हम विश्व को अभिभूत कर सकते हैं, लेकिन हम कर नहीं पाए हैं। हमारी कला और संस्कृति पूरे विश्व को आकर्षित कर सकती है। दुनिया में कहाँ ऐसा भूभाग होगा जहाँ सुबह के लिए एक राग हो, दोपहर के लिए दूसरा हो, शाम के लिए तीसरा हो, मध्य-रात्रि के लिए चौथा हो। किसने सोचा है की सूर्य और चंद्र की कला के साथ कला भी विकसित होती है, ये परंपरा हमारी यहां रही है। दुनिया के बहुत भूभाग ऐसे हैं कि जहाँ का संगीत तन को डुलाता है, लेकिन यही एक भूभाग है जहाँ का संगीत मन को डुलाता है। ये हमारी विरासत है, उस विरासत को विश्व के सामने हम कैसे उजागर करें। कला कभी भी राजाश्रित नहीं हो सकती, और कला कभी भी राजाश्रित नहीं होनी चाहिए। कला सदा-सर्वदा राज्य-पुरस्कृत होनी चाहिए। और राज्य-पुरस्कृत नहीं होगी तो कला कभी विकसित नहीं हो सकती है। भारत के राजघरानों की परम्परायों की जो अनेक विरासतें हमारे पास हैं, उसमें कला और संस्कृति को जो पुरस्कृत किया गया उनके माध्यम से, उसके कारण है। और उसका नाम इन्द्रधनुष भी मुझे बहुत अच्छा लगता है, जैसे इन्द्रधनुष आसमान की रौनक बढ़ा देता है, वैसे इन्द्रधनुष रूपी हमारी कला-संस्कृति विश्व के मानचित्र पर भारत की महानता को सौंदर्यवान करने का प्रयास करता है.....और इस अर्थ में, मैं 'इन्द्रधनुष' नाम को भी पसंद करने के लिए सृजक को बड़ी बधाई देता हूँ।

दूसरी किताब है बिन बुलाए मेहमानों के संबंध में। यहाँ पर कितने पंछी आते हैं, कैसे हैं, उनकी परंपरायें क्या हैं, उसको सब उजागर करने का प्रयास हुआ है। हमारे आस पास बहुत कुछ होता है, लेकिन हमारी जिंदगी ऐसी मशीन जैसी हो गयी है की फूल का गुलदस्ता देखते हैं, लेकिन हमारा ध्यान नहीं होता मैं किस फूल को देखता हूँ। पंछी, पवन और पानी - ये तीनों ऐसे हैं जो सरहद में कभी सिमटते नहीं, उसकी कोई सरहदें नहीं होती हैं। पंछी और पवन और पानी, इसकी कोई सिटिज़नशिप नहीं होती है...और वो विश्व के किसी भी कोने में जाते हैं, अपनी मनमर्जी से चलते हैं...और उन पंछियों की बात, आज जब environment को लेकर पूरा विश्व चर्चा करता है, हमारी एक सांस्कृतिक विरासत रही है, सहजीवन की, प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, प्रकृति के साथ संवादिता, ये हमारे जीवन की परंपरा रही है।

हमारे यहाँ वेद के प्रकाश में उपनिषदें लिखी गयीं, उसके प्रकाश में स्मृतियाँ तैयार हुईं, श्रुतियाँ बनी, और कोई कल्पना कर सकता है की हमारे जो पुराण हैं, उन अठारह पुराण में से एक पुराण है गरुड़ पुराण। यानी हमारे पूर्वजों ने हमारे शास्त्रों में पंछी को क्या महत्व दिया है, और विष्णु और गरुड़ की चर्चा का वो पूरा पुराण है। जब गरुड़ पुराण पर लोग कथा करते हैं

तो आठ-आठ नौ-नौ दिन उसकी चर्चा चलती है, और उसमें विष्णु भगवान, - अभी जो गायक थे उन्होंने भी विष्णु की चर्चा की थी - विष्णु और गरुड़ की चर्चा में, गरुड़ पुराण में, मानवीय मूल्यों में पंछी के जीवन से प्रेरणा की इतनी गहन चर्चा है, यानि हमारे पूर्वजों ने हजारों साल पहले पंछियों के सामर्थ्य को कैसे पहचाना था, उसमें अनुभव आता है।

देखने में आता है की प्रकृति प्रेम, प्रकृति के साथ संवादित, ये हमारी ईश्वर की कल्पना की विशेषता रही है। हिन्दुस्तान की परम्परा में कोई ईश्वर ऐसा नहीं है जिसके साथ कोई पंछी या पशु ना जुड़ा हुआ हो, कोई वृक्ष ना जुड़ा हुआ हो। अब शिवजी के परिवार को देखिए... normally साँप चूहे को खाता है, चूहा साँप का आहार होता है, लेकिन शिवजी का परिवार देखिए... शिवजी के गले में सर्प होता है और गणेश जी का वाहन चूहा होता है। सहजीवन की प्रेरणा किस प्रकार से हमारी परम्परा में रही है, इसका उत्तम उदाहरण इन चीजों से हमें मिलता है। और इसलिए प्रकृति के प्रति प्रेम, प्रकृति के प्रति लगाव.... और पंछी तो वो हैं जिसने हमें पोस्टमैन की कल्पना दी। पूरी पोस्टऑफिस की व्यवस्था जो उजागर हुई है, पहले पंछियों का मेसेंजर के रूप में प्रयोग होता था, उसमें से हुई है।

आज भी दुनिया की कोई ऐसी architecture कालेज नहीं हो सकता, जो वो घोंसला बना सके जो पंछी बनाता है....impossible... अच्छा है की पंछी architecture कालेज में गये नहीं थे वरना वो भी एक ही प्रकार का घोंसला बनाते, जो इंसान कर रहा है। हर पंछी अपनी रुचि, प्रकृति, प्रवृत्ति के अनुसार घोंसला बनाता है। उसकी जो लाइफस्टाइल है उसी के अनुसार होता है। वो जिस इलाके में रहता है वहाँ जो waste मैटीरियल होता है, वो waste में से best बनाता है, कभी कोई पंछी उस पौधे को तोड़ कर अपना घोंसला नहीं बनाता है जो जीवित होता है। waste में से best का जो दुनिया का concept है वो भी पंछी सिखा के गया है।

उसकी ताकत देखिए, आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की ताकत जटायु देता है। एक पंछी सीता की रक्षा के लिए जिस प्रकार से जूझता है, अपनी पंखें कट जायें तब तक लड़ता है, इससे बड़ी प्रेरणा पंछी क्या दे सकता है, और इसलिए पंछी को समझना, उसकी दुनियाँ को जानना, वो भी जीवन को एक नयी ताकत देता है। राष्ट्रपति भवन के परिसर की उस दुनिया को विश्व के सामने उजागर करने के इस प्रयास को मैं बधाई देता हूँ।

आज सुबह मुझे (Rashtrapati Bhawan) museum के उद्घाटन समारोह में आने का अवसर मिला था। मैं मानता हूँ, इतिहास को पुनर्जीवित करने का एक उत्तम प्रयास हुआ है। हम लोगों की कठिनाई रही है, और वो है हम history-conscious society नहीं हैं, और इसके कारण हमारी बहुत मूल्यवान विरासतें..... हाँ सुना था..... हाँ देखा था...उसी में उलझ जाती हैं। दुनियाँ में जहाँ-जहाँ पर हिस्टरी कांशियस सोसाइटी है, उसका एक दबदबा रहा है। राष्ट्रपति भवन के इतिहास को समझने के लिए, देखने के लिए ये जो museum बना है मैं समझता हूँ, हमारी इतिहासिक विरासत को उजागर करने का एक बहुत ही उत्तम प्रयास आज हुआ है...मैं इसके लिए भी बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

मैं मानता हूँ की जो समाज इतिहास भूल जाता है वो इतिहास बनाने की ताकत खो देता है। इतिहास वो ही रच सकते हैं जो इतिहास को समझते हैं, इतिहास को जानते हैं और इतिहास को जीने का प्रयास करते हैं।

मैं समझता हूँ, राष्ट्रपति जी के मार्गदर्शन में ये जो प्रयास हुए हैं ये आने वाली पीढ़ियों के बहुत काम आयेंगे। जब हम, आज पूरा विश्व, environment की चर्चा कर रहा है, तब हमारे पूर्वजों ने जो संदेश दिया है...उन्होंने कहा है और हमारे शास्त्रों ने कहा है, की हम जिस प्राकृतिक संपदा का उपयोग करते हैं, वो प्राकृतिक संपदा हमें हमारे पूर्वजों ने विरासत में नहीं दी है, हम जिस प्राकृतिक संपदा का उपयोग करते हैं, वो प्राकृतिक संपदा हमें हमारे पूर्वजों ने विरासत में नहीं दी है, हम जिस प्राकृतिक संपदा का उपयोग करते हैं, वो हमारी आने वाली पीढ़ी से हमने उधार ली हुई है। इसलिए वो आने वाली पीढ़ी की अमानत है...हम सब का दायित्व बनता है, इस प्राकृतिक संपदा को, हमारी आने वाली पीढ़ी को हम समर्पित करके ही जायें। और तभी जाकर पर्यावरण की वैश्विक रक्षा में हम काम आ सकते हैं।

फिर एक बार राष्ट्रपति भवन के सभी महानुभावों को बहुत-बहुत शुभ कामनायें, बहुत बहुत बधाई।"

SC/AK